"वोट उनको दें जो पूरे देश में पूर्ण गौरक्षा का वचन दे"-रामसुखदासजी

"८०% सांसद गोभक्त होंगे तो पूर्ण गौरक्षा होगी।"-श्रीकाल्लजी

"जिस पार्टी की प्रथम प्राथमिकता गौरक्षा हो, उसे ही संकल्प पूर्वक वोट दें"-राजेन्द्रदासजी

वोट देना राष्ट्र धर्म है एवं परम कर्तव्य है, अतः वोट अवश्य दें।
जनतंत्र में जनता की जरूरी जिम्मेदारी है।
सद्गुनी व्यक्ति को चुनेंगे तो ही प्राणी मात्र की रक्षा एवं सुशासन की स्थापना होगी।

।। या श्री सा गौ।। **गौरक्षा का सरल, सहज, सटीक, श्रेष्ठ, सफल उपाय** ।। ॐ गों गोभ्यो नमः।।

क्या आप गाय **को माता मानते हैं?**
क्या आप भारत **की उन्नति चाहते हैं?**

तो संकल्प लें

"मैं गौरक्षक को वोट दूंगा"

रोज १-२ व्यक्तियों को संकल्प दिलायें।
उनका+अपना नाम, पता, उम्र, ईमेल, मोबाइल लिख भेजें।

राम-राज्य+पूर्ण गौरक्षा के लिए प्रतिबद्ध-राष्ट्रीय अहिंसा मंच
132/1, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-7, फोन-22707114, 9433023999
rashtriyaahinsamanch@gmail.com, www.ramanch.com

"५०%-६०% लोग गौरक्षक को वोट दें तो कानून बन जायेगा"-दत्तशरणानंदजी

बलिवैश्वदेव हवन करें=आकाश+अग्नि तत्व पुष्ट होगा।

पीने के पानी, नदियों, समुद्र में गोमूत्र डालें=जल तत्व शुद्ध होगा।

नवग्रह धूप नित्य चेतन करें-वायु तत्व निर्मल बनेगा।

गौरक्षा=माँ की रक्षा=मानव रक्षा=धन रक्षा=पृथ्वी रक्षा

हर राज्य की राजधानी में+हर जिले के मुख्यालय में एक-एक परिश्रमी, शाकाहारी, गौभक्त कार्यकर्ता चाहिये जो

1. प्रतिदिन दस-बीस लोगो को 'मै गौरक्षक को वोट दूंगा' संकल्प दिला सके।
2. जन कष्ट निवारण-प्रतिदिन 5-6 लोगों के प्रमुख कष्ट को नोट कर भेजें।
3. प्रति सप्ताह दस लोगों को 'राम' का सदस्य बना सके।
4. सक्रीय सदस्यों की साप्ताहिक बैठक बुला सके+विवरण भेजे।
5. प्रचार सामग्री का वितरण, प्रचार, उपलब्ध करा सके, हिसाब रख सके।
6. विविध कार्यक्रमों के आयोजकों से स्वीकृति ले स्टाल लगा सके।
7. दान दाताओं की सूचि बना उन्हें मासिक सहयोग करने पत्र भेज सके।

किसानों और गोपाल को आमदनी दुगुनी करने का उपाय बताने, गाँव-गाँव जाने तैयार कार्यकर्ताओं का स्वागत है।
परिणाम के अनुपात में समुचित मानदेय दिया जायेगा।
फोटो+बायो डाटा सहित आवेदन करें।

राष्ट्रीय अहिंसा मंच
132/1, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-7, 033 22707114, 9433023999, rashtriyaahinsamanch@gmail.com

गोबर+गोमूत्र की खाद डालें=पृथ्वी तत्व मजबूत बनेगा।

प्रेषक–
गाय और गाँव
E-1 राजेन्द्र पार्क,
सण्डे मार्किट के पास,
गुड़गाँव-१२२००१

प्रतिष्ठा में,____________________

गाय और गांव

(पत्रिका नहीं पथदर्शिका)
श्रावण-भाद्रपद २०७० अगस्त २०१३
अन्तरताना संस्करण–gaayorgaon.blogspot.in

रंग लाई संत गोपाल दास द्वारा स्वयं को दी गई यातना

सरकार ने गौचरण की भूमि से जुड़े मामलों के लिए किया समिति का गठन (खबर पृष्ठ क्रमांक 4 पर)

गाय और गाँव

मासिक

RNI TITLE CODE HAR 05145/07, JAN 2011/TC

वर्ष– 1, **अंक**– 4, श्रावण–भाद्रपद

वि.स.–**2070,** युगाब्ध–**5115**, अगस्त– **2013**

प्रेरणा

ब्रह्मलीन पू.स्वामी भक्ति स्वरूपानन्द जी महाराज

मार्गदर्शन

महामण्ड. स्वामी धर्मदेव जी महाराज
स्वामी सत्यदेवानन्द जी महाराज
स्वामी ब्रह्मचेतन जी महाराज

परामर्शदाता

डॉ. इन्द्रजीत यादव, श्री जयपाल सिंह सैनी,
श्री कन्हैयालाल आर्य,
श्री भानीराम मंगला, श्री त्रिलोकचन्द शर्मा

सम्पादक

अजय सिंहल

सम्पादक मण्डल

डॉ. सुरेश वशिष्ठ, राजेन्द्र शर्मा,
नरेन्द्र गौड़, पल्लवी मीलवाणी

प्रबन्ध समिति

कैलाश गर्ग,
नवीन कुमार सिंहल,
आशीष गर्ग

संवाददाता

बृजमोहन सैनी, रूड़की (उत्तरांचल)
प्रदीप लोहोमी, कोटा (राजस्थान)
मनीष यादव, पुणे (महाराष्ट्र)
कुलदीप जांघू (हरियाणा)

सज्जा

हरेन्द्र झा

कार्यालय

ई–1, राजेन्द्र पार्क, सण्डे मार्किट के पास,
गुड़गाँव–122001

दूरभाष–0124–6526572, 9312730451

अणुडाक : gaayorgaon@gmail.com

अन्तरताना संस्करण : gaayorgaon.blogspot.in

सम्पादकीय

आदरणीय पाठक वृंद सावन आया तो शिव भी छाया। नन्दी की सवारी करने वाले शिव को समर्पित यह मास भारतीय संस्कृति में अपना विशेष स्थान रखता है। करोड़ों की संख्या में हिन्दू गंगा का जल लेकर अपने–अपने स्थानों पर भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं।

पर आज के परिपेक्ष्य में क्या मात्र शिव का जलाभिषेक करने से काम चलेगा। शिव को समझना क्या जरूरी नहीं है। उनके साथ जुड़े मान्यताओं, किवदंतियों का राष्ट्र हित में चिन्तन क्या जरूरी नहीं है? निश्चित रूप से मुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि हम अपनी परम्पराओं को रूढ़ी बनाकर ढो रहे हैं। और इन रूढ़ियों का न अपने लिए कोई महत्व है और न राष्ट्र के लिए कोई अर्थ।

यदि शिव को समझे तो उसका वाहन नंदीश्वर है। जो नंदी सम्पूर्ण गौवंश की ओर देखने का हमें संकेत करता है। यह ठीक है कि आज 50 प्रतिशत खेती ट्रैक्टर द्वारा होने लगी है। परन्तु इसके जो दुष्परिणाम सामने आये हैं उससे हमारे पास खेती का एक मात्र विकल्प बैल ही बचता है और जिसको हमें देर–सबेर अपनाना ही होगा।

दूसरी तरफ शिव को गंगा के जल का अभिषेक अति प्रिय है पर हमें समझना होगा जिस जल से हम शिव का अभिषेक कर रहे हैं वह जल 80 प्रतिशत अन्य नदियों का जल है। जो 20 प्रतिशत भागीरथी का जल हम ले रहे हैं वह सैकड़ों बाँधों द्वारा गंगा के अविरल प्रवाह को रोककर उसे दूषित कर दिया गया जल है। यह जल न तो अविरल है और न ही निर्मल।

इस पवित्र मास में हम गौ व गंगा दोनों पर ही चिंतन करें और केवल चिंतन ही न करें अपितु इसके लिए दो कदम आगे रखकर शिव के इन दो परम तत्वों को बचाने का प्रयास भी करें तभी शिव की भक्ति के कुछ मायने होंगे।

वैसे देश में गौवंश रक्षण को लेकर जागरूकता बहुत अधिक बढ़ी है। जो प्रसन्नता का विषय है। हरियाणा में तो कई स्थानों पर गौभक्त जनता ने गौहत्यारों व प्रशासन से सीधी टक्कर ली है। इससे गौहत्यारों के हौसले पस्त है। उधर संत गोपालदास मुनी द्वारा गौचारे की जमीन मुक्त करने के आन्दोलन ने हरियाणा सरकार को सोचने पर मजबूर कर दिया है।

ये सब देखकर तो किसी कवि की ये पंक्तियाँ याद आती है।

केवल सत्ता से मत करना, परिवर्तन की आस।
जाग्रत जनता के केन्द्रों से, होगा अमर समाज।।

रंग लाई संत गोपाल दास द्वारा स्वयं को दी गई यातना

सरकार ने गौचरान की भूमि से जुड़े मामलों के लिए किया समिति का गठन

हरियाणा में गोचरान के लिए भूमि छोड़ने तथा ऐसी भूमि को कब्जों के मुक्त करने के लिए संत गोपालदास द्वारा किया गया अनशन आखिरकार सफल हो गया। प्रदेश सरकार ने राज्य गोसेवा आयोग की बैठक बुलाकर गौचरान की भूमि से से जुड़े मामले की निगरानी के लिए कमेटि का गठन कर दिया है। यह समिति आयोग के अधीन ही काम करेगी। प्रदेश सरकार ने आयोग को अपने काम–काज के लिये पच्चीस लाख रुपये का बजट भी आबंटित कर दिया है। हालांकि गोसेवा आयोग ने 15 करोड़ रुपये कि परियोजनाएँ स्वीकृति के लिए सरकार के पास भेज रखी है, मगर आयोग को अभी सिर्फ पच्चीस लाख रुपये ही मिल पाये हैं। गौरतलब है कि एक वर्ष पूर्व आयोग का गठन हो गया था इससे पूर्व यह राशि भी आयोग को उपलब्ध नहीं थी।

मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने गोसेवा आयोग के गैरसरकारी सदस्यों की संख्या 12 से बढ़ाकर 15 करने की भी घोषणा की। डा. साधू राम शर्मा को आयोग का पूर्णकालीन सचिव नियुक्त किया गया है। हुड्डा ने निर्देश दिये कि गोचरान की भूमि को न तो पट्टे पर दिया जायेगा और न ही खेती के लिए इस्तेमाल होगी। किसी दूसरे कार्य में भी यह जमीन इस्मतेमाल नहीं की जायेगी। पंचायती भूमि पर गोशाला बनाने की मांग पर मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रस्ताव आने पर सरकार द्वारा विचार किया जायेगा।

- **गोसेवा आयोग द्वारा मांगे गये 15 करोड़, सरकार ने दिये केवल 25 लाख**
- **गोचरान समिति गोसेवा आयोग के अन्तर्गत काम करेगी**
- **गोसेवा आयोग के गैर सरकारी सदस्यों की संख्या 12 से बढ़ाकर 15 की।**

भेजने का पता– मैं गोपाल हूँ।

द्वारा 'गाय और गाँव' ई–1, राजेन्द्र पार्क गुड़गाँव– 122001

अणुडाक:(Email)- gaayorgaon@gmail.com

मैं गोपाल हूँ।

क्या आप गौपालन करते हैं?

यदि हाँ। तो अपनी गाय के साथ अपना अथवा परिवार का एक छाया चित्र हमें डाक अथवा अणुडाक (Email) द्वारा प्रेषित करें। साथ में अपना नाम पता व दूरभाष भी लिखें।

मैं गोपाल हूँ। इस शीर्षक के साथ हम आपका चित्र पत्रिका में निःशुल्क प्रकाशित करेंगे। आपका यह चित्र समाज को गोपालन की प्रेरणा देगा।

अनुक्रमणिका

रंग लाई संत गोपाल दास द्वारा स्वयं को दी गई यातना	4
पर्व पत्र	5
परकीय देशों का उद्देश्य	6
भूल न जाओ आन	7
खरी कमाई	8
गोभक्ति के फल	9
विषाक्तता मुक्त फसल रक्षक जैविक कीट नियंत्रण	10
जैविक खेती व समग्र ग्राम विकास	11
पृथ्वी सूक्त और वेदों से जानिए पर्यावरण संरक्षण का महत्व	13
पर्यावरण में मधुमयता	14
अमृत जैसा दूध पिला कर मैंने तुमको बड़ा किया	18
संत, भगवद विग्रह और गाय का कोई मोल नहीं होता	18
गौ माता की रक्षा कैसे करें	19
मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती।	20
सभी मंदिर गौव्रती बने, बैन/गुल्लक लगायें, पंचगव्य–पंचामृत दें, गौ पाले/गौशाला खोलें	21
गावों के लिए ठोस योजना	22
बहल (हरि.) में गौ तस्करों को पीटा, कंटेनर जलाया	23
गोलियों का जवाब पत्थर से देकर मुक्त कराई गाय	24
गौशाला संघ के सदस्य गिरफ्तार, रिहा	25

किसी भी आलेख अथवा रचना की जिम्मेदारी लेखक अथवा रचनाकार की होगी।

सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र गुड़गांव होगा

सदस्यता ग्रहण करें

एक प्रति – 15/– रूपये
वार्षिक – 150/– रूपये
पंच वार्षिक – 500/– रूपये
20 वर्षीय – 1500/–रूपये
धरोहर – 2000/–रूपये

पर्व पत्र

02 अगस्त (श्रावण कृष्ण एकादशी)
कामिका एकादशी व्रत
05 अगस्त (श्रावण कृष्ण चर्तुदशी)
मास शिवरात्री व्रत
06 अगस्त (श्रावण कृष्ण अमावस्या)
हरियाली अमावस्या
09 अगस्त (श्रावण शुक्ल तृतीया)
हरियाली तीज
11 अगस्त (श्रावण शुक्ल पंचमी)
नाग पंचमी
12 अगस्त (श्रावण शुक्ल षष्ठी)
श्री कल्कि जयंती
13 अगस्त (श्रावण शुक्ल सप्तमी)
गोस्वामी तुलसी दास जयंती
14 अगस्त (श्रावण शुक्ल अष्टमी)
श्री दुर्गाष्टमी
15 अगस्त (श्रावण शुक्ल नवमी)
भारतीय स्वतंत्रता दिवस
17 अगस्त (श्रावण शुक्ल एकादशी)
पवित्रा एकादशी व्रत
20 अगस्त (श्रावण शुक्ल चतुर्दशी)
पंचक प्रारंभ, श्री सत्यनारायण व्रत
21 अगस्त (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा)
श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबंधन, संस्कृति दिवस, गायत्री जयंती, शद् ऋतु प्रारंभ
24 अगस्त (भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी)
श्री गणेश संकट चतुर्थी
27 अगस्त (भाद्रपद शुक्ल सप्तमी)
शीतला सप्तमी
28 अगस्त (भाद्रपद शुक्ल अष्टमी)
श्रीकृष्ण जनमाष्टमी व्रत, संत ज्ञानेश्वर जयंती
29 अगस्त (भाद्रपद शुक्ल नवमी)
गोगा नवमी

पाथेय

परकीय देशों का उद्देश्य

(श्री गुरुजी द्वारा 1 नवम्बर 1966 को गोरक्षा महाभियान समिति के तत्त्वाधान में मुगेर की जनसभा में दिये गये भाषण के अंश)

कृत्रिम खाद यहाँ भेजने से उनके दो उद्देश्यों की पूर्ति होती है। एक तो खाद भेजने से हम पर उनका कर्ज बढ़ता जा रहा है। दूसरा यह की उस खाद से हमारे यहाँ की भूमि की उर्वरा–शक्ति कम होती जा रही है। इस बात को हमारे यहाँ के लोग समझते नहीं। वे समझते हैं कि विदेशी विशेषज्ञ हमारी सहायता कर रहे हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं है कि विदेशी हमारे देश की भलाई नहीं, वरन् स्वयं के देश का भला सोचते हैं।

वे कहते हैं– 'यहाँ गायों का दूध क्षयरोगवाहक है।' यदि यहाँ की गायों का दूध पीने से क्षयरोग हो सकता है, तो उसका मांस खाने से क्या नहीं हो सकता? असलियत यही है कि वे चाहते हैं कि यहाँ का पशुधन नष्ट हो और दूध पाउडर के लिए उनपर निर्भर रहे। यह सब अपने देश को गुलाम बनाकर रखने की नीति मात्र है। इसलिए अपने देश के हितों को सदैव ध्यान में रखकर तथा उनके स्वार्थों को समझकर ही हम उनकी कोई सलाह लें। पराधीनता की कोई बात स्वीकार न करें। यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि विदेशी बिना माँगे ही जब कोई सलाह देते हैं, तो उसके पीछे उनका स्वार्थ रहता है। अतः हमें स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना चाहिए, यही बुद्धिमानी की बात है। ✹

शयन करने के कुछ शास्त्रीय नियम

शयन करने के कुछ शास्त्रीय नियम हैं जो कि पूर्णतया विज्ञान परक है। और मै। आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ –

1 . पूर्व में सिर करके शयन करने से विद्या व दक्षिण में सिर करने से धन व आयु वृद्धि होती है। (अनेक शास्त्रों में उक्त)
2. अधोमुख होकर , नग्न होकर , दूसरे की शैय्या पर टूटी खाट पर व जन शून्य घर में नहीं सोना चाहिए। (लघु व्यास संहिता)
3. जुठे मुँह नहीं सोना चाहिए। (महाभारत)
4. देव मन्दिर व श्मशान में न सोयें । (अनेक शास्त्रों में उक्त)
5. अंधेरे में न सोयें । (पद्म पुराण)
6. भीगे पैर , पगड़ी बाँध कर , तिलक युक्त व मुख में ताम्बूल युक्त होकर न सोयें। (अनेक शास्त्रों में उक्त)
7. दिन व दोनों सन्ध्याओं में न सोयें। (ब्र. वै. पुराण ,श्रीकृष्ण)
8. रात्रि के दूसरे व तीसरे प्रहर में सोना चाहिए। (अनेक शास्त्रों में उक्त)
9 . विद्यार्थी, नौकर, पथिक, पीड़ित, भयभीत व भण्डारी को छोड़कर किसी सोये मनुष्य को न जगाये। (अनेक शास्त्रों में उक्त)

भूल न जाओ आन

भारत वासी भारतवालो
भूल न जाओ आन
बचाओ गो माता के प्राण।

गाय हमारी माता है,
जन्म–मरण का नाता है,
इसके दूध को पीकर बच्चे,
होते हैं बलवान।
बचाओ गोमाता के प्राण ।।1।।

यमुना किनारे कृष्ण कन्हैया,
गौवें चरावे बंशी बजैया,
उस बंशी की धुन सुनकर,
गौवें धाई आन।
बचाओ गोमाता के प्राण।।2।।

नव लख गौवें नन्द बाबा की
दूध दही की नदियाँ बहती
माखन मिसरो खा–खाकर के
कृष्ण बने बलवान।
बचाओ गोमाता के प्राण।।3।।

राष्ट्रपिता बापू और विनोबा
कह गये करो सब गौ की सेवा
गोरक्षा ही धर्म हमारा
इसी में सबकी शान।
बचाओ गोमाता के प्राण।।4।।

आज देश में भारतीय शासन,
ये कैसा है अपना शासन
लाखों गायें देश में कटती
नहीं किसी को ध्यान
बचाओ गोमाता के प्राण

– प्रकाशचन्द्र जोशी

खरी कमाई

एक बड़े सदाचारी और विद्वान ब्राह्मण थे। उनके घर में प्रायः रोटी–कपड़े की तंगी रहती थी। साधारण निर्वाह मात्र होता था। वहाँ के राजा बड़े धर्मात्मा थे। ब्राह्मणी ने अपने पति से कई बार कहा कि आप एक बार तो राजा से मिल आओ, पर ब्राह्मण कहते कि वहाँ जाने के लिये मेरा मन नहीं करता। ब्राह्मणी ने कहा कि मैं आपसे माँगने के लिए नहीं कहती। वहाँ जाकर आप माँगो कुछ नहीं, केवल एक बार जाकर आ जाओ। ज्यादा कहा तो स्त्री की प्रसन्नता के लिये वे राजा के पास चले गये। राजा ने उनको बड़े त्याग से रहनेवाले गृहस्थ ब्राह्मण जानकर उनका बड़ा आदर–सत्कार किया और उनसे कहा कि आप एक दिन पधारें। अभी तो आप मर्जी से आये हैं, एक दिन आप मेरे पर कृपा करके मेरी मर्जी से पधारें। ऐसा कहकर राजा ने उनकी पूजा करके आनन्दपूर्वक उनको विदा कर दिया। घर आने पर ब्राह्मणी ने पूछा कि राजा ने क्या दिया? ब्राह्मण बोले–दिया क्या, उन्होंने कहा एक दिन आप फिर आओ। ब्राह्मणी ने सोचा कि अब माल मिलेगा। राजा ने निमन्त्रण दिया है, इसलिये अब जरूर कुछ देंगे।

एक दिन राजा रात्रि में अपना वेश बदलकर, बहुत गरीब आदमी के कपड़े पहनकर घूमने लगे। ठण्डी के दिन थे। एक लुहार के यहाँ एक कड़ाह बन रहा था। उसमें घन मारनेवाले आदमी की जरूरत थी। राजा इस काम के लिये तैयार हो गये। लुहार ने कहा कि एक घंटा काम करने के दो पैसे दिये जायेंगे। राजा ने बड़े उत्साह से बड़ी तत्परता से दो घंटे काम किया। राजा के हाथों में छाले पड़ गये, पसीना आ गया, बड़ी मेहनत पड़ी। लुहार ने चार पैसों को लेकर आ गया और आकर हाथों पर पट्टी बाँधी। धीरे–धीरे हाथों में पड़े छाले ठीक हो गये।

एक दिन ब्राह्मणी के कहने पर वे ब्राह्मण देवता राजा के यहाँ फिर पधारे। राजा ने उनका बड़ा आदर किया, आसन दिया, पूजन किया और उनको वे चार पैसे भेंट दे दिये। ब्राह्मण बड़े संतोषी थे। वे उन चार पौसों को लेकर घर पहुँचे। ब्राह्मणी सोच रही थी कि आज खूब माल मिलेगा। जब उसने चार पैसों को देखा तो कहा कि राजा ने क्या तो दिया और क्या आपने लिया! आप–जैसे पण्डित ब्राह्मण ने चार पैसे बाहर फेंक दिये। जब सुबह उठकर देखा तो वहाँ चार जगह सोने के सिक्कें दिखायी दीं। सच्चा धन उग जाता है। सोने की उन सिक्कों को वे रोजाना काटते पर दूसरे दिन वे पुनः उग आतीं। उनको खोदकर देखा तो मूल में वे ही चार पैसे मिले!

राजा ने ब्राह्मण को अन्न नहीं दिया; क्योंकि राजा का अन्न शुद्ध नहीं होता, खराब पैसों का होता है। मदिरा आदि पर लगे टैक्स के पैसे होते हैं। चोरों को दण्ड देने से प्राप्त हुए पैसे होते हैं–ऐसे पैसों को देकर ब्राह्मण को भ्रष्ट नहीं करना है। इसलिये राजा ने अपनी खरी कमाई के पैसे दिये। आप भी धार्मिक अनुष्ठान आदि में अपनी खरी कमाई का धन खर्च करो।

सच्ची बात

गोभक्ति के फल

सन् 1896 में महाराष्ट्र और कर्नाटक में भयंकर अकाल पड़ा। गरीब–गुरबा और गाय–बैल तथा अन्य पशु भूखों मरने लगे। बीजापुर की तरफ के 'लमाण' जाति के कुछ लोग पेट भरने के लिये कोल्हापुर–राज्य के चिंचली गाँव में आकर रहने लगे। उनके साथ बहुत–से गाय–बैल भी थे। ये लोग नाममात्र मूल्य लेकर अपनी गौओं और बैलों को बेचने लगे। कसाइयों के लिये यह मौका ही था। चार आने से लेकर बाहर आने तक में गाय–बैल बिके और कसाई उन्हें डंडे मारते हुए ले जाने लगे।

गाय–बैल एक तो भूखे थे, दूसरे उनपर डंडों की मार पड़ने लगी। उनसे एक पग भी चला नहीं जाता था। रास्ते हनुमान जी का एक मन्दिर मिला। इन गाय–बैलों में से एक गौ शायद हनुमान् जी को अपना रक्षक जान झुंड में से निकलकर हनुमान जी के सामने जाकर बैठ गयी। कसाइयों ने उसे मार–मारकर उठाना चाहा; पर वह नहीं उठी। उसपर इतनी मार पड़ी कि साठ–सत्तर जखम हो गये और उनमें से रक्त बहने लगा, नेत्रों से आँसुओं की धारा चल ही रही थी। अतिदीन होकर वह चारों ओर ताक रही थी कि कोई माई का लाल आकर छुड़ायेगा। गाँव के लोगों ने सब गौओं को असली खरीद से अधिक मूल्य देकर छुड़ा लिया। पर उस बैठी हुई गौ को खरीदने के लिये कोई तैयार न हुआ। तब पाटिल ने स्वयं उसे बारह आने में खरीद लिया।

'गोमाता! अब उठो' पाटिल के यह कहते ही वह उठकर खड़ी हो गयी। सब लोग आश्चर्य करने लगे। आठ–दस दिन दवा–दारू करने पर वह गौ अच्छी हो गयी। जिस दिन वह गौ पाटिल के यहाँ आयी, उस दिन से पाटिल का भाग्य खुला, उनके घर लक्ष्मी रमने लगीं।

पाटिल की यह वैभववृद्धि कुछ ईर्ष्यालु प्रकृति लोगों से न सही गयी। एक वर्ष के अंदर ही 'गौ चोरी की है' इस अभियोग पर पाटिल के नाम गिरफ्तारी का वारंट निकला। घर के सब लोग रोने लगे; गौ भी रँभाने लगी। पर पाटिल कुछ नहीं बोले। गौ जब्त की गयी, पर उसे ले जाने का किसी को साहस नहीं हुआ, क्योंकि वह गुस्से से भरी हुई, सींग आगे को किये हुए बड़ी तीखी दृष्टिसे देख रही थी। ऐसा मालूम होता था कि दस–बीस आदमी भी उसे पकड़ने के लिये एक साथ उसके पास जाते तो वह सबको लिटा देती। पर इसके आगे और भी तो उपाय उनके लिये थे ही। वे गौ को डंडों से मारने लगे। पाटिल से यह नहीं सहा गया और उन्होंने गौ को छोड़ दिया। सरकारी आदमी उसे मारते हुए महाल रायबाग में ले गये और वहाँ उसे कसकर बाँध रखा। गौ ने खाना–पीना छोड़ दिया और वैसे ही, बिना कुछ खाये–पीये, आठ दिन जहाँ–की–तहाँ खड़ी रही। यह देखकर मैजिस्ट्रेट को दया आयी और उन्होंने गौ अभियुक्त (सुलतान पाटिल) के ही हवाले कर देने का हुक्म दिया।

अभियोग झूठा था। अभियोग रचनेवाले कुछ हिन्दू ही थे और उनमें कुछ ब्राह्मण भी शामिल थे। पास के ही एक गाँव का महार इस काम के लिये खड़ा किया गया था। उसी को फरियादी बनाकर उसके द्वारा यह मामला दायर कराया गया था। पुलिस इंस्पेक्टर ने पाटिल से सबूत माँगा तो उन्होंने सब सच्चा हाल उन्हें सुना दिया ओर कहा कि मेरे पास और कोई सबूत नहीं है। पुलिस इंस्पेक्टर ने सच्चे–झूठे की पूरी जाँच करायी। फरियादी महार उस गौ को जिस पास के गाँव के महार से खरीदी बतलाता था, उस गाँव में यह गौ छोड़ दी गयी, पर वह गौ न तो उस बेचनेवाले महार के घर गयी, न फरियादी

महार के घर, बल्कि वहाँ से छः मील के फासले पर चिंचली गाँव के इन सुलतान पाटिल के घर सीधी चली आयी। अन्त में सत्य की विजय होती है। सरकारी हुक्म से सम्मान के साथ वह गौ पाटिल के घर पहुँचायी गयी, गौ को और सबको बड़ा आनन्द हुआ।

इस गौ ने पाटिल को चार बछड़े और तीन बछियाएँ दीं। वह स्वयं रोज तीन सेर दूध अन्त तक दिया करती थी। मृत्यु के दिन वह गौर रोज की तरह चरने गयी और चरते–चरते एकाएक नीचे बैठ गयी और स्वर्ग को सिधार गयी। पाटिल ने उसकी स्मृति में एक समाधि–मन्दिर बनाया है। उस गौ के वंश का अच्छा विस्तार हुआ है। पाटिल इन बछिया–बछड़ों को इस शर्त पर लोगों को देते हैं कि कोई इन्हें बेचे नहीं। इस प्रकार पाटिल की गोभक्ति का फल सबको मिल रहा है।

शोध

विषाक्तता मुक्त फसल रक्षक जैविक कीट नियंत्रण

देशी गाय के 10 लीटर गोमूत्र में एक किलो नीम के पत्ते डालकर दोनों को तांबे के बर्तन में मुंह बंद करके 15 दिन तक रखें। उसके बाद उसमें 50 ग्राम लहसुन कूटकर बारीक करके डालें। उसे धीमी आंच में इतना पकायें कि 10 लीटर गोमूत्र 5 लीटर रह जाए। तब नीचे उतारें और उसको कपड़े से छान कर रख लें। यह अच्छा कीट नियंत्रक है।

इसी प्रकार देशी गाय के गोमूत्र में नीम के पत्तों के स्थान पर आकड़े के पत्ते अथवा बेल के पत्ते डालकर उसी पद्धति से कीट नियंत्राक तैयार किए जा सकते हैं। इस एक लीटर कीट नियंत्राक में 100 लीटर पानी मिलाकर फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

नीम व बेल पत्र के कीट नियंत्रक फसल पर व फलों पर उपयोगी हैं। यदि कीट लग गए हैं तो नष्ट हो जाएंगे और लगने से पूर्व ही छिड़काव किया जाए तो फसल व फलों को कीट नहीं लगेंगे। आकड़े वाला कीट नियंत्रक खेतों को दीमक मुक्त करने के लिए बहुत ही उपयोगी है।

दो–दो लीटर गोमूत्र में 400–400 ग्राम नीम, करंज, आक, बेल पत्र, तुलसी, सीताफल, करंज या निर्गुडी, जिस जिस पेड़ के पत्ते उपलब्ध हों, अलग–अलग मटकों में भिगोकर रख दें। दसवें दिन सभी मटकों का गोमूत्र एकत्र करके बर्तन में उबालें, आधा रहने पर उतार लें। फिर 15 लीटर पानी के पम्प में 250 ग्राम उबला गोमूत्र मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

किसान 100–100 या 50–50 लीटर के मिट्टी के बर्तनों में हमेशा देशी गाय के गोमूत्र का संग्रह करके रखें। और फसल उगने के हर 15 दिन बाद 15 लीटर पानी में 250 ग्राम पुराना गोमूत्र मिलाकर छिड़काव करते रहें। फसल का हानिकारक कीटों से बचाव हो सकेगा।

दो चम्मच निरमा पाउडर व एक लीटर पानी का घोल बना लें। उस घोल में एक लीटर नीम का तेल मिलाकर पेस्ट बना लें। यह पेस्ट 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। नील गाय नहीं लगेंगी। कीट भी नियंत्रित होंगे। यह घोल लगभग एक मास तक प्रभावी रहता है। ✸

जैविक कृषि

जैविक खेती व समग्र ग्राम विकास

– श्री सुनील मानसिंगका

पिछले 4–5 वर्षों में जैविक खेती आंदोलन में व्यापक तेजी हमारे देश में भी आयी है। यह उतनी भी नहीं है जितने पर हम गर्व कर सकें। क्योंकि क्यूबा जैसा छोटा देश भी पूर्ण 100 प्रतिशत जैविक राष्ट्र बन गया है। अमेरिका, यूरोपीय देश, अन्य विकसित देशों में रासायनिक खेती के दुष्प्रभाव पर व्यापक चिन्ता हो रही है तथा कई देशों ने कीटनाशकों पर प्रतिबन्ध लगाये हैं। वहाँ 'आर्गेनिक' शब्द का प्रचलन भी बहुत बढ़ा है। जैसे ऑर्गेनिक खेती, ऑर्गेनिक गाय, ऑर्गेनिक दूध आदि।

हमारे राष्ट्र में जैविक खेती गोवंश पर आधारित थी। जिसे हमने 'कामधेनु' 'कृषि तंत्र' नाम दिया। वस्तुतः जिसके घर में गाय वही किसान है। यही किसान की परिभाषा है। गाय के पर्याप्त रूप में गोबर–गोमूत्र के स्थान पर रासायनिक खाद, कीटनाशक, बैल की जगह ट्रैक्टर, संतति के लिए कृत्रिम गर्भाधान, भैंस, जर्सी (संकरित नस्ल) आदि कई बातों को बढ़ावा दिया गया।

भारत जैसे कृषि–प्रधान देश में सामान्य किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याएँ हम सभी के लिए घोर चिन्ता का विषय होना चाहिए। शुरूआत में इस भयावह स्थिति से उबारने के लिए निम्न तीन प्रयोग किसान को उसकी आजीविका पूर्ति स समृद्ध बनाने के लिए आवश्यक हैं, ऐसा हजारों किसानों के अनुभव से ध्यान में आया है।

1. केंचुआ खाद, गोबर तथा फसल के कचरे से खाद का उत्पादन व उपयोग।

2. गोमूत्र+नीम या अन्य जड़ी–बूटियों से कीट नियंत्रक।

3. गोबर, गोमूत्र, गुड़ से अमृत पानी।

उपरोक्त तीनों उत्पादन अत्यन्त उपयोगी व प्रभावी सिद्ध हुए हैं। रासायनिक खाद और कीटनाशक पर होनेवाले खर्चे की तुलना में लाखों किसानों ने इनका उत्पादन व उपयोग नियमित रूप से सभी फसलों में करके कृषि की लागत को बहुत घटाया है। इन तीनों उत्पादनों पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों द्वारा व्यापक शोध कार्य जारी है। जिनके परिणाम अत्यन्त उत्साहवर्धक हैं। सामान्य किसानों को भी सरलता से बनाये व उपयोग किए जानेवाले इन पदार्थों में प्रशिक्षित करना चाहिए।

गोवंश आधारित केवल कृषि को ही प्रधानता देना उचित नहीं। इसके अलवा भी गोवंश का दैनिक ग्रामीण जीवन में बहुत महत्व है जिसे समग्र दृष्टि से सबके प्रमुख रखना बहुत जरूरी है। अंग्रेजी शिक्षा व वर्तमान व्यवस्था के प्रभाव से हमारा दृष्टिकोण एकांगी हो गया है। हमारी सदैव सर्वांगीण जीवन पद्धति रही है। कृषि के साथ–साथ गोवंश का निम्न विषयों में सरलता से दैनिक जीवन में उपयोग होता है।

पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति

भारतीय गाय के मूत्र, गोबर, दूध, दही, घी को मिलाने से पंचगव्य बनता है। अलग–अलग गव्य रूप में कई औषधियों में इनको प्रयोग किया जाता है। 32 से 35 प्रकार की जीवन रक्षक–प्रभावी दवाएँ कई केन्द्रों पर बन रही है। जिनको लाखों लोग रोज सेवन कर रहे हैं। इनसे समाज में व्याप्त 60 से 70 प्रतिशत रोग दूर किये जा सकते हैं। जैसे–कामधेनु अर्क, (भारत सरकार व गो–विज्ञान अनुसंधान केन्द्र–नागपुर) ने अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट लिया है। घनवटी, हरड़े चूर्ण, मालिश तेल, आसव, साबून, धूप, मंजन आदि; इनमें मंजन, धूप, साबून तो प्रत्येक घर में बनाये जा सकते हैं।

इनसे किडनी व पेट की अनेकों बिमारियाँ, एलर्जी, सर्दी, खाँसी, दमा, कमलजोरी, मधुमेह, रक्तचाप, कर्करोग, बच्चों, महिलाओं के रोग अधिकांशतः ठीक हो गये हैं। भारतीय गोवंशीय नस्लें ही इन उपयोगों के काम में आती है। अन्य नस्लों में औषधीय गुणधर्म नहीं हैं।

पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा पशुओं के लिए

इस पर व्यापक कार्य वैद्यों द्वार किया जाता है। थैनेला रोग, त्वचा के रोग, पेट की बीमारियाँ आदि पशुओं के रोग पंचगव्य आधारित उत्पादों से ठीक होते हैं।

पारम्परिक ऊर्जा का चिरंजीवी स्रोत (गोबर)

गोबर से गोबर गैस व इससे जनरेटर सफलतापूर्वक चलाये जा रहे हैं। बची हुई स्लरी उपज बढ़ानेवाली खाद है।

अन्य उत्पादन– कुछ गोशालाओं में मच्छरमार धूप बत्ती, अनाज सुरक्षित रखने की टिकिया, डिस्टेंपर व फिनायल जैसे उत्पादन गोबर गोमूत्र के प्रयोग से बन रहे हैं। इस तरह गोवंश पालन समग्र व स्वावलम्बी ग्रामीण विकास की रीढ़ है।

संघटन/गुण	वर्मी कम्पोस्ट	गोबर गैस स्लरी (गोबर गैस के उत्पादित)	नडेप कम्पोस्ट	समन्वय कम्पोस्ट
पी. एव. मान	6.7	6.0	6.6	7.4
विद्युत चालकता (डेसी सायमन/मी.)	0.21	0.36	0.26	0.18
नमी (:)	47.28	52.74	66.04	75.86
जैविक पदार्थ (:)	26.8	51.95	11.74	10.00
नाइट्रोजन (:)	1.01	1.64	0.78	0.40
फास्फोरस (:)	0.30	0.40	0.21	0.14
पोटैशियम (:)	0.45	0.47	0.47	0.74
कापर	22.30	24.0	25.0	20.0
जिंक	85.33	92.13	64.93	52.63
मैगनीज	271.60	261.27	287.40	245.37
लोहा	3683.70	3535.0	3886.17	3850.27

–गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र,

बछरा चौक,नागपुर, 0512–2769032 (निं.) 2772237 (कार्यालय)

पर्यावरण

पृथ्वी सूक्त और वेदों से जानिए पर्यावरण संरक्षण का महत्व

हृदयनारायण दीक्षित

पृथ्वी माता दुरूखी हैं, आकाश पिता कुपित। समूचा सौर मण्डल रोष में है। भूमण्डल का ताप बढ़ा है। लोभी मनुष्य ने क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर को प्रदूषित किया है। वनस्पतियां रो रही हैं, वन उपवन कट रहे हैं, कीट–पतंगे और तितलियां गायब हो रहे हैं। गोरैया ओझल हो रही है। सावन भादों रसवर्षा नहीं लाते, मार्गशीर्ष और फागुन महकते हुए नहीं उमंगते। ऋतुराज वसंत भी उदास–हताश हैं। मधुमास मधुमय नहीं रहता। गंगा सहित सभी नदियां प्रदूषित हैं, यमुना कचरा पेटी बना दी गई है। सरस्वती पहले ही नाराज होकर अन्तर्ध्यान हो गयीं। विकास का औद्योगिक माडल प्रकृति और मनुष्यता का विनाश लेकर आया है। प्रकृति का हिंसक शोषण और भोग ही यूरोपीय–अमरीकी जीवन दृष्टि है। प्रकृति से संघर्ष ही विकास का मूल मंत्र है– ऐसी सोच और सभ्यता के चलते विश्व पर संकट है, प्राणि जगत, मनुष्य, मनुष्यता और पृथ्वी के अस्तित्व पर भी।

पहले मूल को पहचानो

पर्यावरण संकट का मूल कारण पश्चिम की लोभी औद्योगिक सभ्यता है। यूरोप में 1890 के दशक में पर्यावरण की चिन्ता सतह पर आई। यूरोपीय देशों ने 1902 में एक अन्तर्राष्ट्रीय शपथ पत्र पर हस्ताक्षर किये। छिटपुट विचार–विमर्श चले, फिर 1948 में 'इण्टरनेशनल यूनियन फार कंजरवेशन ऑफ नेचर एण्ड नेचुरल रिसोर्सेज' की स्थापना हुई। वनस्पति शास्त्री आड्रस्टन ने पर्यावरण के पांच घटक बताए – पदार्थ, परिस्थिति, ऊर्जा, प्राणी और समय। यहां पदार्थ में मिट्टी, जल व परिस्थिति में ताप व प्रकाश गिने गये और ऊर्जा में वायु व गुरुत्वाकर्षण। 1954 में डौरनमिर ने मिट्टी, हवा, पानी, आग, ताप, प्रकाश व जीव–जंतु को पर्यावरण के घटक बताया। यूरोपीय विद्वान यूं ही हाथ–पैर मार रहे थे। उन्होंने भारतीय चिंतन के पांच महाभूतों–पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश पर ध्यान नहीं दिया। ध्वनि का मूल आकाश व वायु हैं और ताप व प्रकाश अग्नि के रहस्य हैं।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) 1972 में बना। उद्देश्य था जनजागरण और प्राकृतिक आपदाओं की पूर्व सूचना देना। 1992 में पर्यावरण और विकास पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ने 'कार्यक्रम–21' जारी किया। इसके लिए 1993 में सतत् विकास आयोग बना। 'कार्यक्रम–21' दरअसल पर्यावरण प्रबंधन से ही जुड़ा था। सन् 2000 में पेरिस में 'अर्थ चार्टर कमीशन' में विश्व के ढेर सारे वैज्ञानिक तीन दिन बैठे। दो दिन के विचार मंथन के बाद 21 सूत्र खोजे गये। तीसरे दिन भारतीय प्रतिनिधियों ने अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त की चर्चा की। अथर्ववेद में पर्यावरण संरक्षण के सारे सूत्र हैं। लेकिन अथर्ववेद के देश भारत में वेदों की चर्चा करना भी साम्प्रदायिकता कही जाने लगी। बहरहाल सन् 2005 में संयुक्त राष्ट्र का 'सहस्राब्दी पर्यावरण आकलन' जारी हुआ। 95 देशों के 1360 विद्वानों ने धरती के अस्तित्व को खतरा बताया, भूगर्भ जल स्तर नीचे गया है, 12 प्रतिशत पक्षी, 25 प्रतिशत स्तनपायी और एक तिहाई मेढक नष्ट प्रायरू हैं। वनस्पति जगत की तमाम प्रजातियां नष्ट हो रही हैं आदि, आदि।

माता पृथ्वी–पिता आकाश

पर्यावरण संकट अन्तरराष्ट्रीय बेचैनी है। लेकिन भारत में तो ऋग्वैदिक काल से ही धरती माता और आकाश पिता माने गए हैं। नदियां, वनस्पतियां माताएं और देवी हैं। हमारे पूर्वज समूची प्रकृति को देवरूप ही देखते थे। शान्त वातायन–पर्यावरण आनंदित करते हैं। अशान्त माता पृथ्वी और पिता आकाश हमारी अशान्ति का कारण

बनते हैं। यजुर्वेद में एक लोकप्रिय मंत्र में समूचे पर्यावरण को शान्तिमय बनाने की स्तुति है। इस मंत्र में द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी से शान्ति की भावप्रवण प्रार्थना है। ।। **ऊँ द्यौ शांतिरन्तरिक्षः शांतिरू पृथ्वी शांतिरापः शान्तिः रोषधायः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्वः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ऊँ।।**

–(यजुर्वेद– 36.17)

अर्थात– 'जल शान्ति दे, औषधियां–वनस्पतियां शान्ति दें, प्रकृति की शक्तियां – विश्वदेव, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड शान्ति दे। सब तरफ शान्ति हो, शान्ति भी हमें शान्ति दें।' यहां शान्ति भी एक देवता हैं।

मधुमय पर्यावरण ऋग्वैदिक ऋषियों की सहज प्यास है। प्रकृति में रूप है, रस है, गन्ध है, ध्वनियां हैं। वे दिग्दिगन्त 'मधु' कामना करते हैं, **मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोष सो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु घौरस्तु नरू पिता।। मधुमान्नो वस्पतिर्म धुमां अस्तु सूर्यः। माध्यवीर्गावो भवन्तु नः।।** (ऋग्वेद 1.90ध्6, 7, 8)

वायु मधुमय है। नदियों का पानी मधुर हो, औषधियां, वनस्पतियां मधुर हों। माता पृथ्वी के रज कण मधुर हों, पिता आकाश मधुर हों, सूर्य रश्मियां भी मधुर हों, गाएं मधु दुग्ध दें। अथर्ववेद के भूमि सूक्त में कहते हैं, 'देवता जिस भूमि की रक्षा उपासना करते हैं वह मातृभूमि हमें मधु सम्पन्न करे। इस पृथ्वी का हृदय परम आकाश के अमृत से सम्बंधित रहता है। वह भूमि हमारे राष्ट्र में तेज बल बढ़ाये। पृथ्वी सूक्त के 12.1.7 व 8 श्लोक कहते हैं 'हे पृथ्वी माता आपके हिम आच्छादित पर्वत और वन शत्रुरहित हों। आपके शरीर के पोषक तत्व हमें प्रतिष्ठा दें। यह पृथ्वी हमारी माता है और हम इसके पुत्र– **माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्याः।** (वही 11–12) स्तुति है 'हे माता! सूर्य किरणें हमारे लिए वाणी लायें। आप हमें मधु रस दें, आप दो पैरों, चार पैरों वाले सहित सभी प्राणियों का पोषण करती हैं।' यहां पृथ्वी के सभी गुणों का वर्णन है लेकिन अपनी ओर से क्षमायाचना भी है, 'हे माता हम दायें– बाएं पैर से चलते, बैठे या खड़े होने की स्थिति में दुखी न हों। सोते हुए, दायें– बाएं करवट लेते हुए, आपकी ओर पांव पसारते हुए शयन करते हैं– आप दुखी न हों। हम औषधि, बीज बोने या निकालने के लिए आपको खोदें तो आपका परिवार, घासफूस, वनस्पति फिर से तीव्र गति से उगे–बढ़े। आपके मर्म को चोट न पहुंचे।' 63 मंत्रों में गठित इस पृथ्वी सूक्त को अमरीकी विद्वान ब्लूमफील्ड ने विश्व की श्रेष्ठ कविता बताया है।

पर्यावरण में मधुमयता

शुद्ध पर्यावरण में मधुमयता है। पृथ्वी, आकाश मधुमय हैं। ऋग्वेद में स्तुति है, **'हे द्यावा पृथिवी, मधु मिमिक्षताम्** – 'आप दोनों हम सबको मधुर रस से युक्त करो। माता का स्वभाव ही पुत्रों को मधुरस देना है। कहते हैं, 'आप – **मधुश्च्युता** – मधुर रस का स्राव करने वाली हो।', **मधुदुघे** – मधुर रस की वर्षा करने वाली हो, **मधुव्रते** – 'मधुर रस देना तुम्हारा स्वभाव ही है।' (6.70. 5) सृष्टि में परस्परावलम्बन है। ब्रह्माण्ड का एक–एक कण, जीव, उल्का, ग्रह नक्षत्र हमारे परिजन हैं। यह सब मिलाकर हमारा परिवार है और यही पर्यावरण।

वृहदारण्यकोपनिषद् (अध्याय 2, ब्राह्माण्ड 5) में याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को समझाया, **'इयं पृथ्वी सर्वेषा भूतानां मध्वस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु** – यह पृथ्वी सभी भूतों (मूल तत्वों) का मधु है और सब भूत इस पृथ्वी के मधु।' (वही, 1) इसी प्रकार 'यह अग्नि समस्त भूतों का मधु है और समस्त भूत इस अग्नि के मधु हैं।' (वही 2) 'यह वायु समस्त भूतों का मधु है और समस्त भूत वायु के मधु हैं।' (वही, 3) फिर आदित्य और दिशा चन्द्र,

विद्युत मेघ और आकाश को भी इसी प्रकार 'मधु' बताते हैं। (वही, 4–10) फिर कहते हैं 'यह धर्म और सत्य समस्त भूतों का मधु है और समस्त भूत इस सत्य व धर्म के मधु है।' (वही, 11–12) यहां धर्म का अर्थ समूची सृष्टि प्रकृति को परिवार जानना और बरतना ही है। प्रकृति चाहती है सब जिएं, सबको जीने दें, सब सुखी हों, सब आनंद मग्न रहें। मधुमय हो सबका जीवन। प्रगाढ़ संवेदना की तरंग में इसी अनुभूति से जन्म लेती है – मधुप्रीति और मधुप्रीति से युक्त कोई भी व्यक्ति पर्यावरण का नाश नहीं कर सकता।

प्रकृति के नियम

प्रकृति की सभी शक्तियां एक सुनिश्चित विधान में चलती हैं। वैदिक भाषा में इसे ऋत कहा गया। ऋत नियमों से बड़ा कोई नहीं। अग्नि प्रकृति की विराट शक्ति हैं। वे भी **'ऋतस्य क्षत्ता'** हैं। (6.13.2) अग्नि ऋत–सत्य के प्रकाशक **'ऋतस्य दीदिवं'** है। नदियां भी ऋतावरी हैं। नियमानुसार बहती हैं। ऋत नियम का धारण करना ध र्म है। विष्णु बहुत बड़े देवता हैं। लेकिन 'धर्मान्' – धर्म ध ारण करते हुए तीन पग चलते हैं। (1.22.18) तेजस्वी सूर्य भी **'धर्मणा'** हैं। (1.60.1) सविता द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी को **'स्वायधर्मणे'** – अपने धर्म के कारण प्रकाश से भरते हैं। (4.53.3) जो ऋत है, वह सत्य है, ऋत और सत्य का अनुसरण धर्म है। प्रजापति इसीलिए ष्सत्यधर्माष हैं। (10.121.9) प्रकृति की सभी शक्तियां नियमबद्ध हैं तो मनुष्य का आचरण भी नियम आबद्ध होना चाहिए।

पृथ्वी के बाद पर्यावरण का मुख्य घटक है जल। ऋग्वेद में जल को विश्व का जन्म देने वाली श्रेष्ठ–मां कहा गया–**मातृतमा विषस्य स्थातुर्जगतो जनित्री।** (6. 50.7) सृष्टि विकास का डारविन सिद्धांत भी जीवों की उत्पत्ति जल से मानता है। यूनानी दार्शनिक थेल्स भी ऐसा ही मानते हैं। जल हमारे जीवनरस का आधार है। भारत के सारे तीर्थों का उद्गम पवित्र जलराशि है। ऋग्वेद में कहते हैं 'हे यज्ञ प्रेमियो! हम सब जल को प्रतिष्ठा दें।' (वही 10.31.14) कहते हैं 'जल प्रवाह सदा अंतरिक्ष से आते हैं, वे जल–माताएं – देवियां हम सबकी रक्षा करें।'(वही 10.49.1) स्तुति है, 'जो दिव्य जल (आपो दिव्या) आकाश से आते हैं, नदियों में प्रवाहित हैं, जो खोदकर (कुआं आदि) प्राप्त होते हैं जो स्वयं प्रवाहित, शुचिता लाते हैं, वे जल माताएं हम सबकी रक्षा करें।' (वही 2) 4 मंत्रों के इस सूक्त में प्रत्येक मंत्र के अंत में जुड़ा हुआ है कि 'आपो देवीरिह **मामवन्तु** – वे जल देवियां हमारी रक्षा करें।' इस सूक्त में भी जल **मधुश्यचुतरू शुचयो**– अर्थात् मधुरसयुक्त पवित्र हैं। (वही – 3) ऋग्वेद में जल को सूर्य के निकटस्थ बताया गया है। जल श्रेष्ठतम भिषक–वैद्य भी है।

जल यानी जीवन

ऋग्वेद में जल संस्कृति का कल–कल प्रवाह है। जल आचमनीय था, पवित्र करता था। प्राण और पोषण था। हम सब उसका संरक्षण करते थे। ऋग्वेद की ही जल संस्कृति और परम्परा का विकास अथर्ववेद में भी है। स्तुति है 'जल माता–देवी हमारा कल्याण करे। (अथर्ववेद 1.6. 1) ऋषि दीर्घजीवन के अभिलाषी हैं। इसलिए स्तुति है, ष्जल माता हमें आरोग्यवर्द्धक पुण्य औषधियां दे।' (वही) वे प्रत्येक जल से स्तुति करते हैं 'सूखे प्रदेश का जल कल्याण दे, जल से भरे प्रदेश का जल सुख दे, भूगर्भ जल सुखप्रद हो, लोटा–गिलास का जल शान्ति दे और वर्षा जल भी सुख शान्ति दे।' (वही 4) वे जल हमारा पोषण मां की तरह करते हैं। कहते हैं, 'जैसे वात्सल्यपूर्ण माताओं का स्नेह उमड़ता ही रहता है, उन्हीं माताओं की भांति आप हमें अपने रस से पूर्ण करें।' (अथर्ववेद 1.5.2)

जल वर्षा है। वर्षा से अन्न है। अन्न से प्राणी है और इसी से पोषण है। जल से ही वनस्पतियां–औषधियां हैं। जीवन जगत के सभी प्रपंच जलतरंग से जुड़े हैं। ऋषि अन्न के लिए जलस्तुति करते हैं और वनस्पतियों, औषधियों के लिए भी। जल सुखी और समृद्ध जीवन का आधार है।

शतपथ ब्राह्मण में तो **'आपो वै प्राणः** – जल को ही प्राण बताया गया है। सभी देव जल में ही प्रतिष्ठित हैं – **यद् देवा अदरू सलिले, सुंरब्धा अतिष्ठत्।** (वही 10.72. 6) देवों तक अपनी स्तुतियां पहुंचाने के लिए भी जल ही साधन है। वे ही पितरों तक पिंडदान पहुंचाते हैं। लेकिन विश्व जल संकट के कगार पर है। जलाशय सूखे हैं। वन–उपवन नंगे–उजाड़ हैं। बादल बिना बरसे ही घूम फिरकर लौट जाते हैं। वैदिक ऋषियों ने जलमाताओं से संवाद किया था, स्मृतियों में जल संरक्षण को महान पुण्य बताया गया है। वृहस्पति ने कहा है 'नया जलाशय बनवाने या पुराने को संरक्षण देने वाले का कुल मिलाकर उद्धार होता है।' पाराशर ने जल दूषित करने वाले को कुत्ते की योनि में भेजा है। उन्होंने जल दूषित करने वाले विद्वान ब्राह्मण को भी यही सजा सुनाई है। लेकिन आधुनिक सभ्यता में जल को माता, दिव्यता मानने और जानने की परम्परा समाप्त हो गयी।

प्राण यानी वायु

पर्यावरण का एक मुख्य घटक वायु भी हैं। वायु से आयु है। वायु प्रत्येक प्राणी का प्राण हैं लेकिन देवों का प्राण भी वायु ही है **'आत्मा देवानां।'** (10.10.168.4) वायु प्रत्यक्ष देव हैं और प्रत्यक्ष ब्रह्म भी। ऋग्वेद (1.90.9) में स्तुति है **'नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रहमासि, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। तन्मामवतु** – वायु को नमस्कार है, आप प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं, मैं तुमको ही प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगा। आप हमारी रक्षा करें।' ऋग्वेद का यही मन्त्र यजुर्वेद (36.9) अथर्ववेद (19.9.6) व तैत्तिरीय उपनिषद् (1) में भी जस का तस आया है। कहते हैं, 'वायु ही सभी भुवनों में प्रवेश करता हुआ प्रत्येक रूप में प्रतिरूप होता है– **वायुर्थेको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो वभूवः।** सभी जीवों में प्राण की सत्ता है। प्राण वस्तुतः वायु है। मनुष्य पांच तत्वों से बनता है। मृत्यु के समय सभी तत्व अपने–अपने मूल में लौट जाते हैं। ऋग्वेद (10.16.3) में स्तुति है 'तेरी आंखें सूर्य में मिल जायें और आत्मा वायु में। तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया' अग्नि तत्व अग्नि में जाए और प्राण तत्व वायु में– **भुव इति वायौ।**

वायु सबके संरक्षक हैं। (वही 20) वशिष्ठ के सूक्तों में इन्हें अति प्राचीन भी बताया गया है 'हे मरुत, आपने हमारे पूर्वजों पर भी बड़ी कृपा थी'। (वही, 23) फिर मरुतों का स्वभाव बताते हैं 'वे वर्षणशील मेघों के भीतर गर्जनशील हैं। (1.166.1) कहते हैं,' वे गतिशील मरुद्गण भूमि पर दूर–दूर तक जल बरसाते हैं। वे सबके मित्र हैं। (1.167. 4) यहां मरूद्गण वर्षा के भी देवता है। वे मनुष्यों को अन्न पोषण देते हैं। (1.169.3) प्रकृति में एक प्रीतिकर यज्ञ चल रहा है। वायु प्राण हैं, अन्न भी प्राण हैं। अन्न का प्राण भी वर्षा है। वायुदेव/मरुतगण वर्षा लाते हैं। ऋग्वेद में मरुतों की ढेर सारी स्तुतियां हैं। कहते हैं 'आपके आगमन पर हम हर्षित होते हैं, स्तुतियां करते हैं।' (5.53.5) लेकिन कभी–कभी वायु नहीं चलती, उमस हो जाती है। प्रार्थना है, हे मरूतो आप दूरस्थ क्षेत्रो में न रुकें, द्युलोक अंतरिक्ष लोक से यहां आयें। (5.53.8) भारत का भावबोध गहरा है। वायु प्राण है, वायु जगत् का स्पंदन है। वैदिक मंत्रों में प्राणवायु की सघनता है। हम सब वैदिक संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं, बावजूद इसके यूरोपीय, अमरीकी सभ्यता के प्रभाव में हम देव स्वरूप वायु को प्रदूषित करते हैं।

वैदिक परम्परा के सूत्र आज भी लोक रीति में हैं। तुलसी पूजा, पीपल पूजा और वटवृक्ष की पूजा के तत्व वन संरक्षण से ही जुड़े हुए हैं। गांवों में आज भी पेड़ काटने को पाप और वृक्षारोपण को पुण्य बताया जाता है। नदियों के दीपदान का अर्थ नदी का सम्मान करना है। यज्ञ हवन के कर्मकाण्ड रूढ़ि नहीं हैं, इनमें प्रकृति की प्रीति और वातायन शुद्धि की ही आकांक्षा है। यजुर्वेद के एक सुंदर मंत्र (6.21) में कहते हैं, 'यह हवि–स्वाहा समुद्र को मिले। यह स्वाहा अन्तरिक्ष जाये। यह स्वाहा सूर्य को प्राप्त हो, यह मित्र वरुण को, यह रात्रि–दिवस को, यह पृथ्वी को, यह सोम वनस्पतियों और यह स्वाहा सभी दिव्य शक्तियों को और यह स्वाहा छन्दस को।' यहां छन्दस् पर्यावरण का ही पर्यायवाची है।

ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य तनावग्रस्त है। प्रीतिपूर्ण वार्तालाप का ध्वनिस्तर 20 डेसीबिल, जोरदार बहस का 60, मिक्सी का 85, मोटर साइकिल का 90, जीपों–कारों का 95–100, वायु यान 105–110 बताया जाता है। राजधानी दिल्ली का औसत ध्वनि स्तर 80–150 है। कोलकाता का 80–147, मुम्बई 71–104 लेकिन लखनऊ का 70–80 है। सभी शहरों का ध्वनि स्तर सामान्य (50–60 डेसीबिल) से ज्यादा है। इसका मनुष्य की श्रवण शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ा है। परिवहन साधनों व अंधाधुंध मशीनीकरण के कारण प्राणलेवा कोलाहल है। यही स्थिति वायु प्रदूषण की है। तमाम गैसों के उत्सर्जन से धरती आकाश के बीच स्थित ओजोन परत को खतरा है। अराजक खनन के कारण पृथ्वी घायल है। रेडियोधर्मा विकिरण ने अंतरिक्ष को भी आहत किया है। भूमण्डलीय ताप सहित सम्पूर्ण पर्यावरण पर तमाम अंतरराष्ट्रीय बैठकें/समझौते हुए हैं लेकिन 'विकास के बहाने' ताकतवर राष्ट्र इन पर अमल नहीं करते। विश्व मानवता के सामने जीवन–मरण का प्रश्न है। भारत की संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के सारे सूत्र हैं। वैदिक परम्परा और संस्कृति का विज्ञान लेकर भारत को ही विश्व का नेतृत्व करना चाहिए।

पेप्सी के शौकिनों के लिए बुरी खबर

पेप्सी के शौकीनों के लिए बुरी खबर है। 'सेंटर फॉर इन्वॉयर्मेंटल हेल्थ' नामक संगठन का दावा है कि पेप्सी में मौजूद कई तत्व हैं जो कार्सिनोजेनिक (कैंसर का रिस्क बढ़ाने वाले) हैं और पेय में इनकी तय से ज्यादा मात्रा काफी चिंताजनक है।

द टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित खबर के अनुसार, पेप्सी को कैरामिल रंग देने के लिए उसमें जो रसायन मिलाए जाते हैं उनमें मौजूद कार्सिनोजेनिक तत्व फूड एंड ड्रग्स एसोसिएशन (एफडीए) द्वारा निर्धारित मात्रा से अधिक हैं।

गौरतलब है कि इस साल मार्च माह में पेप्सिको इंक और कोका–कोला कॉर्पोरेशन ने कैलिर्फोनिया के कानून के मद्देनजर माना था कि वे कोल्डड्रिंक्स के फार्मूले में फेरबदल करेंगे। साथ ही, एफडीए द्वारा निर्धारित मात्रा में ही इन तत्वों को शामिल कर कैंसर की चेतावनी के साथ उन्हें बाजार में उतारेंगे।

हाल में इनके फार्मूले का परीक्षण 'सेंटर फॉर इन्वॉयर्मेंटल हेल्थ' नामक संगठन ने किया जिसमें कोका कोला को तो क्लीनचिट मिल गई लेकिन पेप्सी के फार्मूले में कोई फेरबदल नहीं पाया गया। यह संगठन अमेरिका में परीक्षण व निगरानी इकाई के रूप में सक्रिय है।

परीक्षण में पाया गया कि पेप्सी को कोला रंग देने के लिए उसमें 4– मिथाइलिमाइडेजोल (4–मेल) नामक रसायन मिलाया जाता है जिससे कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। हालांकि पेप्सी को निर्देश दिए गए हैं कि इस रसायन की मात्रा को एफडीए द्वारा निधार्रित मात्रा को फरवरी 2014 तक कम करे।

वहीं पेप्सिको कंपनी ने माना है कि वैश्विक स्तर पर वह अपने ड्रिंक को नए फार्मूले पर उतारेगी लेकिन उन्होंने किसी समयसीमा की जानकारी नहीं दी है। हालांकि एफडीए व दूसरी नियामक एजेंसियों ने अभी तक पेप्सी को सुरक्षित ही माना है।

रक्त संचार

अमृत जैसा दूधा पिला कर मैंने तुमको बड़ा किया

अमृत जैसा दूध पिला कर मैंने तुमको बड़ा किया
अपने बच्चे से भी छीना पर तुमको मैंने दूध दिया.
रूखी सूखी खाती थी मैं
कभी न किसीको सताती थी मैं
कोने में पड़ जाती थी मैं
दूध नहीं दे सकती अब तो
गोबर से काम तो आती थी मैं
मेरे उपलों की आग से तूने भोजन अपना पकाया था
गोबर गैस से रोशन कर के तेरा घर उजलाया था
क्योंकर मुझको बेच रहा रे उस कसाई के हाथों में ?
पड़ी रहूंगी इक कोने में मत कर लालच माँ हूँ मैं.
मर कर भी है कीमत मेरी खाल भी तेरे काम आए
मेरी हड्डी की कुछ कीमत शायद तू ही घर लाए
मैं हूँ तेरे कृष्ण की प्यारी
वह कहता था जग से न्यारी
उसकी बंसी की धुन पर मैं
भूली थी यह दुनिया सारी
मत कर बेटा तू यह पाप
अपनी माँ को न बेच आप
रूखी सूखी खा लूँगी मैं
किसीको नहीं संजंनदहप मैं
तेरे काम ही आई थी मैं
तेरे काम ही आउंगी मैं.

कथा

संत,भगवद विग्रह और गाय का कोई मोल नहीं होता।

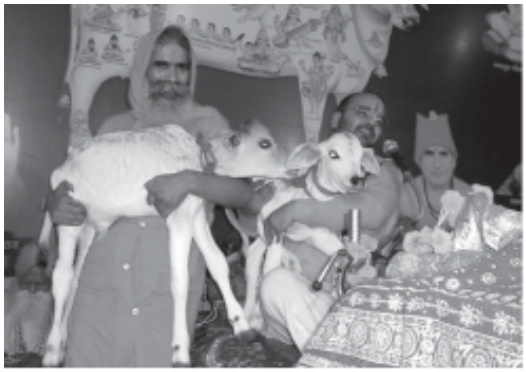

एक बार श्री आपस्तम्ब ऋषि श्री नर्मदा जी के अगाध जल में समाधि लगा कर तप में निरत थे। संयोग से वे मछुओं के जाल में फंस गए। मछुए जब उनको बाहर निकाले तो वे इन परम तपस्वी को देख कर डर गए। ऋषि ने कहा डरने की कोई बात नहीं, तुम लोगों की तो यह जीविका है। मछली की जगह तो मै ही फंस गया तो तुम लोग मुझे बेच कर उचित मुल्य प्राप्त करो। मल्लाहों की समझ में नहीं आ रहा था। कि वे क्या करे? उसी समय राजा नाभाग जी यह समाचार पाकर वहां आये और मुनि की पूजा एवम प्रणाम कर हाथ जोड़ कर बोले–महाराज! कहिये, मैं आप की कौन सी सेवा करूँ? ऋषि ने कहा–आप हमारा उचित मूल्य अर्पण करो। राजा ने कहा–मैं उन्हें एक करोड़ मुद्रा या अपना सारा राज्य देने को प्रस्तुत हूँ। ऋषि ने कहा यह भी हमारा उचित मूल्य नहीं है। अब तो राजा चिंता में पड़ गए। भगवान की इच्छा से उसी समय महर्षि लोमश जी वहाँ आये। जब उनको सारी बात बताई तो वो बोले–राजन! आप इनके बदले इन मछुआरों को एक गाय दे दो। साधू ब्राह्मण और गाय तथा भगवद विग्रह का कोई मोल नहीं होता। ये तो अनमोल हैं। यह निर्णय सुन कर श्री आपस्तम्ब ऋषि भी प्रसन्न हो गए।

कहने का तात्पर्य यह है कि गाय की अनंत महिमा है। गोदान जीव के लिए लोक और परलोक दोनों में परम कल्याणकारी हैं।

सुझाव

गौ माता की रक्षा कैसे करें

गौ माँ की रक्षा के लिए सबसे पहले हमें हमारे खुद के घर में गौमाता को पालना पड़ेगा, जब हर घर में गौपालन होगा तभी सम्पूर्ण गौरक्षा हो सकेगी .....

अगर हम घर में गौपालन नहीं कर पाते हैं तो घर के बाहर एक वचमद गौशाला शुरू करें या आप–पास की गौशाला से जुड़े..ताकि तवंक पर रहने वाली गौ को चारा मिल सके...

गौशाला के लिए दान करे, ये जरूरी नहीं है की आप रुपये ही दान करें... आप अनाज, घास, चारा, दवाईयाँ भी दान कर सकते है! अपने जान पहचान वालों के साथ इस बारे में बताये जिससे आपका एक छोटा सा ग्रुप बन जाएगा!

आपका ये छोटा सा ग्रुप ही अब गौ को बचाने के काम आएगा!

सड़क पर रहने वाली गौ के लिए अपने घर के बाहर चारा और पानी रखे... अगर बीमार या घायल है तो उनका ईलाज करे और उनको को गौशाला में भेजने का बंदोबस्त करें..

अपने आस पास किसी गौ रक्षक ग्रुप से जुड़े! अगर कही पे गौ हत्या हो रही हो या किसी वाहन में गौमाता ज्यादा मात्रा में दिखाई दें और आपको लगे की इनको कत्लखाने भेजा जा रहा है तो आप तुरंत गौ रक्षकों को बता दें, जिससे गौ हत्या रोकी जा सके! आस–पास के कत्लखानो का विशेष धयान रखे की वहा गौ हत्या न हो!

अपने समाज में, कालोनी में एक कमेटी बनायें जो जरूरत पड़ने पर गौशाला में चारा एवं दवाईयाँ उपलब्ध करा सकें! कई गौशाला वाले नंदी को रखने से मना कर देते हैं क्योंकि उनके पास पहले से ही बहुत नंदी होते हैं तो आप उन्हें नंदी के साथ थोड़ा दान देकर उसे रखने के लिए राजी कर सकते हैं... इस प्रकार गौ हत्या बंद और गौ सेवा भी हो जाएगी ! ✸

अमरजेन्सी गौरक्षा कोल सेंटर भारत ०११३०१३०१५१

ये फोन नं. डायरी में नोट रखे ये पूरे भारत में सक्रिय है. अपने क्षेत्र में गौरक्षा दल बनाने हेतु संपर्क करें–

आलोक सोलंकी जी – 09415155424, 09990927493
गौरक्षदल पंजाब – 09814252878
सुदर्शन न्यूज – 01202542266 , 01202543344
गौरक्षा दल राजस्थान– 09950481929 , 08302050119
गौरक्षा दल हरियाणा– 09896010815 , 09812934500
हरियाणा – 8295312050
दिल्ली – 7838150777
पंजाब – 9814284153, 9814252878
हिमांचल – 9816072246
गुजरात – 9805467442
उत्तर प्रदेश – 9897904111
मध्य प्रदेश – 7552733777
महाराष्ट्र – 7552733777
बुदेलखंड – 9621344698
कर्नाटक – 9886699957
पश्चिम बंगाल – 9433118551
राजस्थान – 9414245251,9950481929
आंध्र प्रदेश – 9000214000

प्रकृति का उपहार

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती।

–आचार्य संजय पंडा : 9437580581, 9040409274

सुनने में यह असंभव सा लगता है, किन्तु इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं। जिस देश की धरती सोना उगलती है, हीरे–मोती देती है, उसके लिए 10000 प्रतिमाह देना परिश्रम साध्य अवश्य है एवं बुद्धिपूर्वक परिश्रमी व्यक्ति के लिए सहज ही संभव है।

अमृत मिट्टी बनानी

100 वर्ग फुट को 100 भाग में बाँट ले। सबसे पहले उसमें 1 फुट गहरी अमृत मिटटी तैयार करनी है।मिट्टी. एग्रोवेस्ट लें, 2 इंच भर दें। उसपर गोबर गोमूत्र घोलकर डालें। इसी प्रकार 2–2 इंच मिट्टी 2–2 दिने पर तैयार करें– 7 बार। 30 दिन बाद उस मिटटी में गेंहू और दाल के बीज बो दें। 14 दिन बाद जो उगेगा उसे काटकर उसी मिट्टी में मिला दें। यह हो गया हरी खाद से मिट्टी को मजबूत करना। फिर 15 दिन तक उसे छोड़ दें। इस प्रकार कुल 65–70 दिनों में मिट्टी तैयार हो जाएगी।

बोना

हर राज्य का अपना कृषि पंचांग होता है कि किस माह में क्या बोना चाहिए। हर बार 2–3 तरह के बीज बोने चाहिए। हर वर्ग फुट में कद्दू और लौकी के बीज बो दिए तो 90 दिनों में फसल तैयार हो जाती है। लताओं को इस तरह उठाना है कि हर पौधे को पर्याप्त हवा, रौशनी और पानी मिले। हर पौधे में 10 से 25 किलो फल लगेंगे। 100 पौधों में 1000 किलो (10 रूपए किलो से भी बेचें) 10000 रुपये प्रतिमाह मिल गया। इस प्रक्रिया में मिट्टी की देखभाल बच्चों जैसी करनी पड़ती है। समय–समय पर धूपपानी देना होता है। खरपतवार को काट कर वहीं डालने से वे आच्छादन का काम करती है और थोड़े दिनों में हरीखाद बन जाती है। कम से कम 2 घंटा प्रतिदिन देना है अपने खेत को। फसल को बाजार में बेचने में कितना समय लगेगा? यह स्थान–स्थान पर निर्भर करेगा। इसके बाद अश्वगंधा, एलो वेरा, मीठी तुलसी (स्टीबिया) के पौधे लगाये जा सकते हैं। इनमे से भी हरपौधा, हर माह 100 रुपये दे सकता है– हो गए 10000। इस प्रकार 12 माह में 3 तरह की फसल बोनी चाहिये। 3 महीने बाद सेम, करेला खीरा बोना है या बैंगन, टमाटर, मिर्च भी बोया जा सकता है। किस स्थान पर किस सब्जी की मांग है, किसके ज्यादा–ज्यादा भाव है, उसे ही बोना चाहिए। 1 फसल खत्म होते–होते दूसरी लगा देनी है। इस प्रकार इंटर क्रॉपिंग करनी है कि 12 माह फसल मिलती रहे। इसमें पूर्ण सफलता मिलने में ज्यादा–सेज्यादा 2–3 साल लग सकते हैं। इसके लिए ग्रीन हाउस बनाना है और तापमान को कण्ट्रोल करना आवश्यक है। गर्मी बढ़ने पर फुवारे चलाकर तापमान को नियंत्रित किया जा सकता है।

शुक्ल पक्ष में पौधे लगाने चाहिए ताकि चन्द्रमा की तरह वे बढ़ सके। घांस पतवार उगे तो उसे काट करवहीं डाल देना है ताकि समय–समय पर मिट्टी को हरी खाद मिलती रहे। हर 7–15 दिनों पर, बीच–बीच में गोमूत्र से बना नीमास्त्र और ब्रह्मास्त्र का छिड़काव करना है ताकि फसल को कीड़े न लगे। इसी प्रकार बथुआ, पालक,लाल साग मेथी, खड़ासाग, धनिया पत्ती की खेती 5 X 5 की क्यारी बनाकर की जा सकती है। 1 मुट्ठी साग का 10 रुपये पकडे तो 1000 मुट्ठा साग हर माह मिल सकता है। 10000 रुपये प्रतिमाह आसानी से मिल सकता है। मेड़ पर हल्दी, अदरख, काली मिर्च, पिपली आदि की खेती से भी लाभ बढ़ सकता है। इसको सीखने के लिए 3 से 10 दिन की ट्रेनिंग लेने राउरकेला आना होगा। प्रतिदिन भोजन खर्च देय होगा। दीर्घकाल वहां रहकर अनुसन्धानकर्ताओं का स्वागत है।

अनुष्ठान

सभी मंदिर गौव्रती बने, बैन/गुल्लक लगायें, पंचगव्य-पंचामृत दें, गौ पाले/गौशाला खोलें

ओरछा में मलूक पीठाधीश्वर राजेंद्रदासजी महाराज की कथा 5 से 13 जून चली। संस्कार चौनल में इसका सीधा प्रसारण आ रहा था। संत शिरोमणि दत्तशरणानन्दजी महाराज राजेंद्रदासजी महाराज ने इस कथा में गौरक्षा हेतु जनता को एवं मंदिरों को **'गोव्रती'** बनने का आग्रह किया। अर्थात देशी गाय के ही दूध, दही, घी का प्रयोग हो– दीपक में, हवन में, प्रसाद में। संत की प्रेरणा से राजाराम के मंदिर के व्यवस्थापकों ने सर्वप्रथम राजाराम को **'गोव्रती'** बनाने का निर्णय लिया। क्योंकि राजा के आचरण का –प्रजा अनुसरण करती है। इसी सन्दर्भ में हम आप से प्रार्थना करते हैं कि कृपया आप अपने मंदिर को भी **"गोव्रती"** बनाये। देशी गाय के दूध, दही, घी से बने व्यंजन का भोग लगायें। दीपक आरती में देशी गाय का घी ही प्रयोग करें। एवं गोमय से बनी **नवग्रह धुप** ही निवेदन करें। साथ ही मंदिर में आने वाले हर भक्त को **"गोव्रती"** बनने की प्रेरणा दें।

इसी प्रकार संत राजेंद्रदासजी ने 10 जून 4:55 मिनट पर जनता को दोनों हाथ खड़े कर संकल्प दिलाया कि **'हम उसी व्यक्ति/पार्टी को वोट देंगे जिसकी प्रथम प्राथमिकता गौरक्षा हो।'** इससे सम्बंधित एक **"बैनर"** अपने मंदिर में लगाने की प्रार्थना है ताकि मंदिर में आने वाले को संकल्प द्वारा गौरक्षा का अनंत पुण्य कमाने का मौका मिल सके। अगर आप उन्हें भी रोज 1–2 को संकल्प दिलाने प्रेरित कर सके उनका विवरण नोट करके हमें दे सके तो और भी अच्छा होगा। कृपया गौरक्षा गुल्लक भी लगायें।

संत शिरोमणि दत्तशरणानन्दजी महाराज ने मानव जीवन सफल करने हेतु सत्व शुद्धि पर बल दिया। सत्व शुद्धि हेतु आहार शुद्धि जरुरी है। उन्होंने बताया, हम 3 प्रकार के आहार लेते है– हवा, पानी और स्थूल आहार। गोमय से बनी धूप–गोघृत दीपक, गोघृत से हवन करने से हवा शुद्धि होती है। गोमूत्र पान से जल शुद्ध होगा। गौदूध, गौदधि, गौघृत से स्थूल आहार शुद्ध होगा।

पहले जमाने में हर मंदिर में गाय होती थी

(सर्वदेवमयी गौमाता की उपस्थिति से मंदिर प्राणवान होता है) एवं पंचगव्य ही पंचामृत के रूप में भक्तों को दिया जाता था। अतः प्रार्थना है कृपया दो चार बूँद पंचगव्य/गोमूत्र या उसका अर्क मिलकर भक्तों को दें। इससे उनका स्वास्थ्य सुधरेगा। साथ ही मंदिर में गाय रखने का विचार करें या स्थानाभाव हो तो मंदिर की आय से और भक्तों के सहयोग से आस पास जमीन लेकर गौशाला खोलने का विचार करें। मंदिर में चढ़ावे से गौशाला संचालन सुगमता पूर्वक होगा सबको बहुत पुण्य प्राप्त होगा। हर मंदिर, गौवंश को सुखी रखते हुए प्रेम पूर्वक कर्तव्यबोध से गौवंश पालने लगे तो ठाकुरजी अवश्य प्रसन्न होंगे–क्योंकि गायें जहाँ सुखपूर्वक रहती है– वह वृन्दावन है– वहां राम/कृष्ण अवश्य रहते हैं।

अच्छी पहल

गावों के लिए ठोस योजना

"राम (मंच)" के हनुमान (**कार्यकर्त्ता**) गाँव–गाँव जायेंगे, गाँव में राम राज्य लाने का प्रस्ताव गाँव वालों को देंगे। जो जो गाँव वाले रूचिवान होंगे उनकी **सहकारी समिति** बनायीं जायेगी। सहकारी समिति के सदस्य मिल बैठकर तय करेंगे।

1. हम सब मिलकर देशी गोवंश ही पालेंगे। अपना गौधन बढ़ाते जायेंगे। नस्ल सुधारेंगे, दूध बढ़ायेंगे, बैलों से खेती करेंगे। देशी गोवंश का गोबर 1 रूपए प्रति किलो, और गोमूत्र 5 रुपये प्रति लीटर समिति लेगी। माल बेचने से प्राप्त राशि से भुगतान होगा।
2. गोपालक, जमीन दाता, अर्थ प्रदाता, कार्यकर्ता सहकारी समिति के सदस्य होंगे।
3. जो सदस्य जमीन और कमरे देगा उसे एक हजार रुपये भाड़ा, प्रति माह मिलेगा।
4. समिति के सदस्य मिलकर 50 प्रतिशत रुपये एकत्र करेंगे, जो जितना धन देगा उसे 18 प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज मिलेगा।
5. गाँव के 4–5 युवक जो उत्पादन करेंगे उन्हें ढाई हजार रुपये प्रतिमाह वेतन मिलेगा।
6. उस जमीन पर गोबर गैस प्लांट लगेगा। कमरों में अर्क उत्पादन होगा और उत्पादित माल रखा जायेगा।
7. गोबर गैस की सहायता से, गोमूत्र से अर्क एवं कीट नियंत्रक बनेगा। गोबर गैस प्लांट की स्लरी सर्वश्रेष्ठ खाद है ही। उसमें दाल का आटा, गुड़ और एक मुट्ठी मिटटी मिलाकर, जीवामृत/ मटका खाद बनाकर किसानो को 2 रुपये प्रति लीटर। गोमूत्र से कीट नियंत्रक एवं अर्क 100 रूपए प्रति लीटर दिया जायेगा।
8. गाँव वालों को **नेडप चूल्हा** दिया जाएगा और गोबर से गोएठा बनेगा जो रसोई बनाने के काम आयेगा।
9. गोबर से 4 इंच X 3 इंच X 30 इंच लकड़े तैयार किये जाएँगे जो शवदाह के काम आयेगे।
10. अतिरिक्त उत्पादन को शहर में भेजने और बेचने की व्यवस्था की जाएगी।
11. कालांतर में गोबर से अंगराग, मंजन य गोमूत्र से फिनाइल, गोबर गैस से एवं बैलों से **बिजली** भी बनायीं जा सकती है। समिति **समाधी खाद**, **नवग्रह धुप** आदि भी बना सकती है। आसपास बस स्टेशन या रेलवे स्टेशन हो तो कुछ महिलाएं गेंहू पीसकर **राम–रोटी** भी बना सकती है जोकि वहां बिके। समिति, किसानो को खाद+कंडा देगी, बदले में भूसा, कृषि उपज लेगी, गौपालकों से गोबर, गौमूत्र, दूध लेगी, भूसा अन्न बदले में देगी, दूध से दही, दही से घी भी बनाया जा सकता है। समिति चाहे तो किसानो से प्राकृतिक खेती की उपज खरीदकर अच्छे दामो में बेचकर मुनाफा कमा सकती है। समिति **ग्राम गौशाला** खोल सकती है। समिति चाहे तो करघे लगाकर खादी भी पैदा कर सकती है। ये अतिरिक्त काम प्राथमिक कार्यों की सफलता के बाद किये जाये और स्व–अर्जित पूँजी से किये जाएँ। मशीन पर जो नियोजन होगा उसका 50 प्रतिशत गाँव वाले दे और 50 प्रतिशत **"राम"** देगा। लाभ का भी 50 प्रतिशत हिस्सा गाँव वाले को और 50 प्रतिशत **"राम"** को मिलेगा।

अनुमानित नियोजन : गोबर गैस प्लांट और चूल्हा पाइप– 50,000, अर्क प्लांट –10,000, ड्रम (कीटनाशक और जीवामृत हेतु)–10,000, फ्रेम–प्लास्टिक –5,000, वर्किंग कैपिटल –25,000 **कुल** : 1,00,000।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

खबर

बहल (हरि.) में गौ तस्करों को पीटा, कंटेनर जलाया

एक तस्कर गंभीर, 26 बैल मुक्त कराए

बहल–भिवानी रोड पर रविवार सुबह लोगों ने 26 बैलों से भरे एक कंटेनर को पकड़ा। गुस्साए लोगों ने बैलों को कंटेनर से बाहर निकालकर उसे आग के हवाले कर दिया। वहीं उसमें सवार सभी छह तस्करों की लोगों ने पिटाई कर दी। उनमें से एक तस्कर को गंभीर हालत के कारण भिवानी रेफर कर दिया। भीड़ को काबू करने के लिए बहल, बाढड़ा, लोहारू, तोशाम व सिवानी थाने से पुलिस बुलाई गई।

रविवार सुबह 10 बजे बहल के बाजार से एक कंटेनर गुजरा तो दुकान की छत पर खड़े एक गौ सेवक की नजर उस ट्रक पर पड़ गई। उसने देखा कि इस कंटेनर में ठूंस ठूंसकर बैल भरे हुए हैं। उसने जानकारी अन्य लोगों को दी। उन्होंने गाड़ी से उस कंटेनर का पीछा किया। भिवानी रोड पर रिलायंस पेट्रोल पंप के पास इस कंटेनर को रुकवाने की कोशिश की तो चालक ने उनकी गाड़ी को टक्कर मार दी। मगर गौसेवकों ने अपनी गाड़ी को कंटेनर के आगे लगा दिया। इस पर कंटेनर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे धंस गया। इस दौरान तस्करों ने गौ सेवकों को जान से मारने की धमकी दी और गाड़ी हटाने को कहा। घटना की जानकारी मिलने पर कस्बे के अन्य लोग भी घटनास्थल की और दौड़ पड़े। इस पर यहां देखते ही देखते लोगों की अच्छी खासी भीड़ एकत्र हो गई।

गौ सेवकों ने पुलिस बुलाई। पुलिस मौके पर पहुंची तो लोगों ने इसी दौरान कंटेनर में सवार चालक सहित सभी छह लोगों को नीचे उतार लिया। इस दौरान लोगों ने ट्रक पर सवार दो लोगों को उठाकर सड़क पर फेंक दिया। इस कारण उनमें से एक के सिर में गहरी चोटें आई। इसी दौरान लोगों ने कंटेनर में सवार चार अन्य लोगों को भी लात घूंसों से पीटना शुरू कर दिया।

इस पर पुलिस ने किसी तरह लोगों के चंगुल से गौ तस्करों को छुड़वाकर उन्हें बहल के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। पांच को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी वहीं एक घायल को गंभीर हालत के कारण भिवानी रेफर कर दिया। बैलों को चारा पानी दिया, उनका उपचार कराया और इसके बाद इन बैलों को गौशाला में भेज दिया।

दिल्ली–यूपी में बेचते थे

गौ तस्करी में पकड़े गए युवकों की पहचान उत्तरप्रदेश के रिफाकत, अलीम, नबी हसन, शहजाद, मोहम्मद तसलीम व हनीफ के रूप में हुई है। इन्होंने पूछताछ में बताया कि वे लंबे समय से पंजाब, राजस्थान व हरियाणा से बैल खरीदकर दिल्ली व यूपी में बेचते थे। रविवार को मुक्त कराए सभी बैल वे पंजाब की रामा मंडी से लाए थे। वे दिल्ली जा रहे थे, मगर पंजाब में नाकेबंदी के कारण वे राजस्थान से हरियाणा में प्रवेश कर गए थे।

तस्करों व 250 अन्य पर केस

थाना प्रभारी उमाशंकर शर्मा ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। 50 अज्ञात लोगों के खिलाफ आगजनी व 200 अन्य पर धारा 147, 149, 435, 323 के तहत मामला दर्ज जांच शुरू कर दी है।

बिजली बंद करानी पड़ी

गुस्साए लोगों ने कंटेनर को आग लगा दी। इस बीच बहल कस्बे की बिजली सप्लाई को बंद कराना पड़ा क्योंकि यह कंटेनर सड़क किनारे बिजली लाइन के नीचे धंसा हुआ था। इसलिए आग लगने की वजह से बिजली के तार टूट सकते थे।

आग बुझाने का विरोध

सूचना मिलने पर डीएसपी रमेश कुमार व बाढड़ा, तोशाम, लोहारू और सिवानी के थाना प्रभारी अपनी–अपनी टीमों को लेकर पहुंच गए। वहीं करीब डेढ़ बजे भिवानी से दमकल आग बुझाने पहुंची। दमकलकर्मी आग बुझाने लगे तो भीड़ ने इसका भी विरोध किया।

खबर

गोलियों का जवाब पत्थर से देकर मुक्त कराई गाय एक को पकड़ा

भिवानी से मानहेरू तक चली तस्करों और गौसेवकों में मुठभेड़, छह तस्कर भाग निकले

शहर से कैंटर में गाय भरकर ले जा रहे गौतस्करों और गौसेवकों में रविवार रात लगभग दो बजे हुई मुठभेड़ में गौतस्करों ने फायरिंग कर दी। जवाब में गौसेवकों ने उनपर पत्थर बाजी की। लेकिन गौ तस्कर भाग निकले। इसके बाद गौसेवकों ने अपने साथियों को फोन कर दिया जिन्होंने गौसेवकों ने मानहेरू में गौ तस्करों को घेर लिया, पर यहां भी गौ तस्कर फायरिंग करते हुए भाग निकले। हालांकि एक गौ तस्कर को गौसेवकों ने पकडने में कामयाबी हासिल कर ली। पशु तस्करों से चार गाय मुक्त करवाई गई।

दरअसल, गौसेवकों को काफी दिनों से सूचना मिल रही थी कि शहर से गायों की तस्करी की जा रही है। रविवार रात एक सूचना पाकर गौसेवकों ने कोंट रोड पर करीब दो बजे तस्करों को पकडने के लिए डेरा डाला। रात को टाटा 407 में गायों को भरकर तस्कर वहां आए। गौसेवकों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया तो तस्करों ने फायरिंग शुरू कर दी। गौसेवकों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी। गौसेवक चार थे और तस्कर सात–आठ। इसी दौरान सिर में पत्थर लगने से एक गौभक्त राजू घायल हो गया।

दूसरा साथी उसे सामान्य अस्पताल लेकर गया। इसी का फायदा उठाकर तस्कर मानहेरू की ओर भाग गए। बाकी गौ भक्तों ने फोन से इसकी सूचना मानहेरू में अपने साथियों को दी। इसके बाद मानहेरू के गौ भक्तों ने ट्रैक्टर–ट्राली लगा तस्करों की गाड़ी को रोकने का प्रयास किया। यहां से भागने के प्रयास में तस्करों ने गाड़ी एक मकान में भी ठोक दी। इससे मकान के दरवाजे टूट गए और दीवारें भी क्षतिग्रस्त हो गईं। गांव में बचने के लिए तस्करों ने गौसेवकों पर फिर फायरिंग शुरू कर दी। अंधेरे का फायदा उठाकर छह तस्कर भाग गए लेकिन एक पकड़ा गया।

चोरी कर चुका है पकड़ा गया आरोपी

पकड़ा गया आरोपी समीर उर्फ चिल्ली गौ तस्करी में ही शामिल नहीं बल्कि चोरी समेत अन्य अपराधों में भी शामिल है। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि उक्त युवक काफी समय से गौ तस्करी में शामिल था। रोहतक में टायर चोरी करने की वारदात भी आरोपी ने कबूली है। इसके अलावा अन्य कुछ वारदातों में भी उसका हाथ था।

टाटा की टक्कर से मकान क्षतिग्रस्त

मानहेरू गांव में अपने आपको घिरा देख जब गौतस्करों ने गाड़ी बैक कर भगानी चाही तो गाड़ी ग्रामीण चांदराम के मकान में ठोक दी। इससे मकान के दरवाजे टूट गए और दीवारें भी काफी क्षतिग्रस्त हो गई। चांदराम ने बताया कि उसे लगा जैसे भूकंप आ गया। बाहर की ओर भागे। देखा तो टाटा 407 ने टक्कर मार रखी थी।

काफी दिन से तलाश रहे थे तस्करों को

मामले में गौभक्त संजय परमार ने बताया कि वे काफी दिनों से उक्त गौतस्करों की तलाश में थे। रात को उक्त गौतस्करों ने भिवानी के कोंट रोड पर गौ भक्तों पर हमला किया और एक को घायल भी कर दिया।

गांव मानहेरू में ग्रामीणों ने गौ तस्करों की टाटा पर अपना गुस्सा निकाला और उसे बुरी तरह तोड़ दिया।

गौतस्करों ने गौ भक्तों पर गोली चलाई है। छह गौतस्कर तो भाग गए और एक पकड़ा गया है। सभी के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम और जानलेवा हमला करने का मामला दर्ज किया है। बाकी आरोपियों की तलाश की जा रही है।

खबर

गौशाला संघ के सदस्य गिरफ्तार, रिहा

संत गोपालदास की सभी मांगों को तुरंत पूरा करने, गौचारण भूमि का खाली करवाने जैसी अन्य मांगों को लेकर हरियाणा राज्य गोशाला संघ के सदस्यों ने आज आईजी चौक से पारिजात चौक तब प्रदर्शन करने के बाद रोड जाम कर दिया। पता चलते ही डीएसपी. सहित पुलिस बल मौके पर पहुँचा और जाम लगाने वालों को खदेड़ा तथ 35 लोगों को हिरासत में लिया गया। इनमें उत्तर सिंह, शमशेर आर्य, कुलदीप सिंह, राम भगत, राम कुमार, कृष्ण, सुनील, छोटू राम, इंद्राज, सुनील रंगलाल, दीपेश सोनू व अन्यों को आज कोर्ट में पेश किया जहाँ से उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया।

संघ और संत गोपालदास की मांगों को लेकर पिछले कुछ दिनों से आइजी चौक पर धरने का नेतृत्व कर रहे शमशेर आर्य ने कहा कि सरकार जल्द से जल्द गौचारण भूमि खाली बरवाकर प्रदेश में गौचारण भूमि के विकास के लिए बोर्ड का गठन किया जाय। साथ ही दर्ज मुकदमें के अनुसार भ्रष्टाचार व धोखाधड़ी से अरोपी ट्रस्ट व समितियों के रजिस्ट्रार को तुरंत बर्खास्त कर गिरफ्तार किया जाए। उन्होंने कहा कि जब तक गोपालदास की सभी मांगों को पूरा नहीं किया जाता, इनका धरना प्रदर्शन जारी रहेगा। उन्होंने बताया कि संत गोपालदास इन मागों को पूरा करवाने के लिए स्वयं पिछले 61 दिनों से सोनीपत में अनशन पर बैठे हैं और सरकार उनकी मांगों को पूरा करने की बजाय उनके अनशन को नाकाम करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि गौचारन भूमि को उपलब्ध होने से प्रदेश के कई इलाकों में गऊ माता के आवारा विचरण को रोका जा सकेगा।

इस अवसर पर उनके साथ राजेश पूरिया, किसान यूनियन के प्रधान चांदराम, होशियार सिंह गौशाला कृ के अध्यक्ष शिव कुमार भगत सिंह, ... सभा कठोड़ के अध्यक्ष राजवीर सिंह, भूतपूर्व सैनिक संघ के सूबेदार हरि सिंह, ... कुलदीप सिंह ..... विकास, नरेन्द्र, संदीप बिश्नोई आदि उपस्थित थे।

(पृष्ठ 22 का शेष)

वार्षिक उत्पादन : अर्क कीट नियंत्रक 3000 X 100 = 3,00,000 जीवामृत/मटका खाद– तरल रूप में 50000X 2 = 1,00,000, कंडे छोटे– रसोई हेतु, बड़े–शवदाह हेतु 20000X10 = 2,00,000, **कुल** : 600000

वार्षिक लागत : 1लाख किलो गोबर 1= 1,00,000 10 हजार लीटर गौमूत्र 5– 50,000, कच्चा माल+अन्य खर्च = 1,00,000, वेतन+भाडा+ब्याज 1,50,000

कुल : 4,00,000,

वार्षिक अनुमानित : लाभ 6,00,000–4,00,000 = 2,00,000

लाभ के 50 प्रतिशत से विकास हो, उत्पादन बढे, नए उत्पाद जोड़े जाएँय बाकि 50 प्रतिशत लाभ को आधा–आधा समिति के सदस्यों और मंच को दिया जाये।

गो सेवा हित

भानीराम मंगला ने की भाजपा हरियाणा प्रदेष गोवंश विकास प्रकोष्ठ प्रदेश कार्य समिति की घोषणा

गुड़गांव 30 जुलाई, 2013 भाजपा हरियाणा प्रदेश गोवंश विकास प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक भानीराम मंगला ने अपनी प्रदेश कार्य समिति की घोषणा कर दी है। आज जारी एक बयान में भानीराम मंगला ने कहा कि, भारतीय जनता पार्टी देश में एक ऐसा राजनैतिक दल है, जिसने विचार किया कि हमारे देश की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। गांवों की अर्थव्यवस्था कृषि और गोधन पर आधारित है, इसलिए इसकी महत्ता को समझते हुए पार्टी ने अब से लगभग 6 वर्ष पूर्व गोवंश विकास प्रकोष्ठ का गठन कर गाय को बचाने की बात की। गाय बचेगी तो यह देश बचेगा। पहले हमारा किसान गाय पालता था, गाय का दूध स्वयं व अपने बच्चों को पिलाता या गोबर से खाद बनाकर खेतों में डालता या बछड़ों के बैल बनाकर कृषि उद्योग चाहे खेत जोतने का कार्य हो या सिंचाई के लिए रहट चलाने का कार्य हो सभी कार्य बैलों से करता था। खेती से जो अन्न पैदा करता था खुद खाते तथा पशुओं को खिलाते बचा हुआ बेच कर अपने घर के और कामों में लगाता था। कहने का अर्थ है कि, सब–कुछ किसान का अपना होता था तथा कुछ भी बाहर से नहीं खरीदना पड़ता था और अब ट्रैक्टर से खेती, रसायन खाद का उपयोग, सिंचाई के लिए बिजली या इन्जन पमपिंग सैट सब–कुछ बाहर से खरीदना पड़ता है चाहे ट्रैक्टर व पमपिंग सेट के लिए डीजल हो या फिर बिजली या रसायन खाद हो सब–कुछ इतना मंहगा हो गया है, जिसके लिए किसान को बैंकों से ऋण लेना पड़ता है, किसान ऋण के नीचे इतना दब जाता है कि, किसानों को आत्म हत्या करनी पड़ती है। इस सब को देखते हुए भाजपा फिर से किसानों के खोए हुए गौरव को वापिस लाए जाने के लिए वचनबद्ध है। जिसके लिए हरियाणा में मुझे दुबारा से गोवंश विकास प्रकोष्ठ की प्रदेश संयोजक जिम्मेदारी दी गई है, और आज में अपनी प्रदेश की टीम को घोषणा कर रहा हूँ। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि, 11 अगस्त को गोवंश विकास प्रकोष्ठ राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक गुड़गांव में होटल चौपाल में हो रही है जिसमें हमारे पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं का मार्ग दर्शन मिलेगा।

अपनी नई टीम की विस्तृत जानकारी देते हुए, भानीराम मंगला ने बताया कि, नई कार्यकारिणी में अशोक गर्ग (जींद) सह संयोजक, अवधेश कुमार सिंह (गुड़गांव) सह संयोजक, रणसिंह वशिष्ठ (रेवाड़ी कोसली) सह संयोजक, अमित बंसल (कुरूक्षेत्र) सह संयोजक, सुन्दर मुनि (हथीन, पलवल) करण भारद्वाज (पलवल) भगवान गौड़ (गुड़गांव) जागेराम सांगवान (हिसार) आनन्द जैन (सोनीपत) कृष्णलाल तनेजा (करनाल) पूर्व प्रधान पवन कुमार (रतिया) लालचंद्र यादव (महेन्द्रगढ़) तेजसिंह सिवाड़ा (भिवानी) अमित यादव (रेवाड़ी) सतपाल मधु (हिसार) सरजीत बघेल (सोहना) पूरणसिंह बघेल (फरीदाबाद) कमल शर्मा (झज्जर) चौ0 जितेन्द्र (महेन्द्रगढ़) दुलीचंद वाजपेयी (मेवात) कार्य समिति के सदस्य नियुक्त किए गए हैं। इनके अलावा जिला संयोजकों में ओम प्रकाश गर्ग (हिसार), ब्रह्मपाल सैनी (सोनीपत), शुभराम खण्डेलवाल (भिवानी), कन्हैयालाल छावड़ी (रेवाड़ी), विनोद सावनी (पंचकुला), राजेश भाटिया (पानीपत), शक्ति मंगला (पलवल), पवन अथलाना (करनाल), कल्याण सिंह मंदार (यमुना नगर), कमल सोरोत (फरीदाबाद), रिशाल सिंह यादव (महेन्द्रगढ़), रामनिवास भूना (फतेहाबाद), कैलाश कुमार (कुरूक्षेत्र), प्रियव्रत भारद्वाज (गुड़गांव), ईश्वर सिंह मलिक (जींद), अनिल शर्मा (झज्जर), ईश बजाज (रोहतक), नरेश थापर (अम्बाला शहर), दौलतराम (कैथल), ओम प्रकाश (सिरसा) को शामिल किया गया है।

भानीराम मंगला
संयोजकः– गोवंश विकास प्रकोष्ठ
भाजपा हरियाणा, दूरभाष 09416103334

दिल्ली में संत गोपालदास की मुहिम को समर्थन देते गौवंश विकास प्रकोष्ठ भा.ज.पा. के कार्यकर्ता

गौवत्स पूजा (बछवारस) के सुअवसर पर गौ वन्दना व गोष्ठी

विषय- गौवंश की आर्थिक उपयोगिता

भजनकार- पं. राकेश उपाध्याय

मुख्य वक्ता - श्री सुनील मानसिंहकां

(समन्वयक- गौ अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर)

अध्यक्ष-डा. इन्द्रजीत यादव (पूर्व डीन, कृषि विश्व विद्यालय, हिसार)

दिन व दिनांक - भाद्रपद कृष्ण द्वादशी २०६० तदनुसार १ सितम्बर २०१३ रविवार पूर्वाह्न ११ बजे

स्थान - वैश्य भवन, सेक्टर-४, गुरुग्राम (हरियाणा)

:-आयोजक:-

गाय और गांव मासिक पत्रिका 9213182474	गौवंश व संस्कृति रक्षा मंच 9312504955	गौसेवा हित कथामृत समिति 9416103334	बृजरस गौसेवा समिति 9818820198

मक्खन फीड्स गोलीवाला दाना पशु आहार

मक्खन फीड्स के पशु आहार है जहां
दूध ही दूध है वहां

मक्खन फीड्स के पशु आहार

मक्खन सुप्रीम पशु आहार (चूरा)

मक्खन सुप्रीम पशु आहार (गोलीवाला)

मक्खन फीड्स के पशु आहार

मक्खन सोयाकॉन पशु आहार (गोलीवाला)

मक्खन सुपर पशु आहार (गोलीवाला)

अमी चन्द मक्खन लाल फीड्स प्रा0 लि0
निर्माताः मक्खन पोल्ट्री एवं कैटल फीड्स
सैक्टर 10- ए के सामने, पटौदी रोड़, कादीपुर, गुड़गांव-122001
मोबाईल - 09818328250